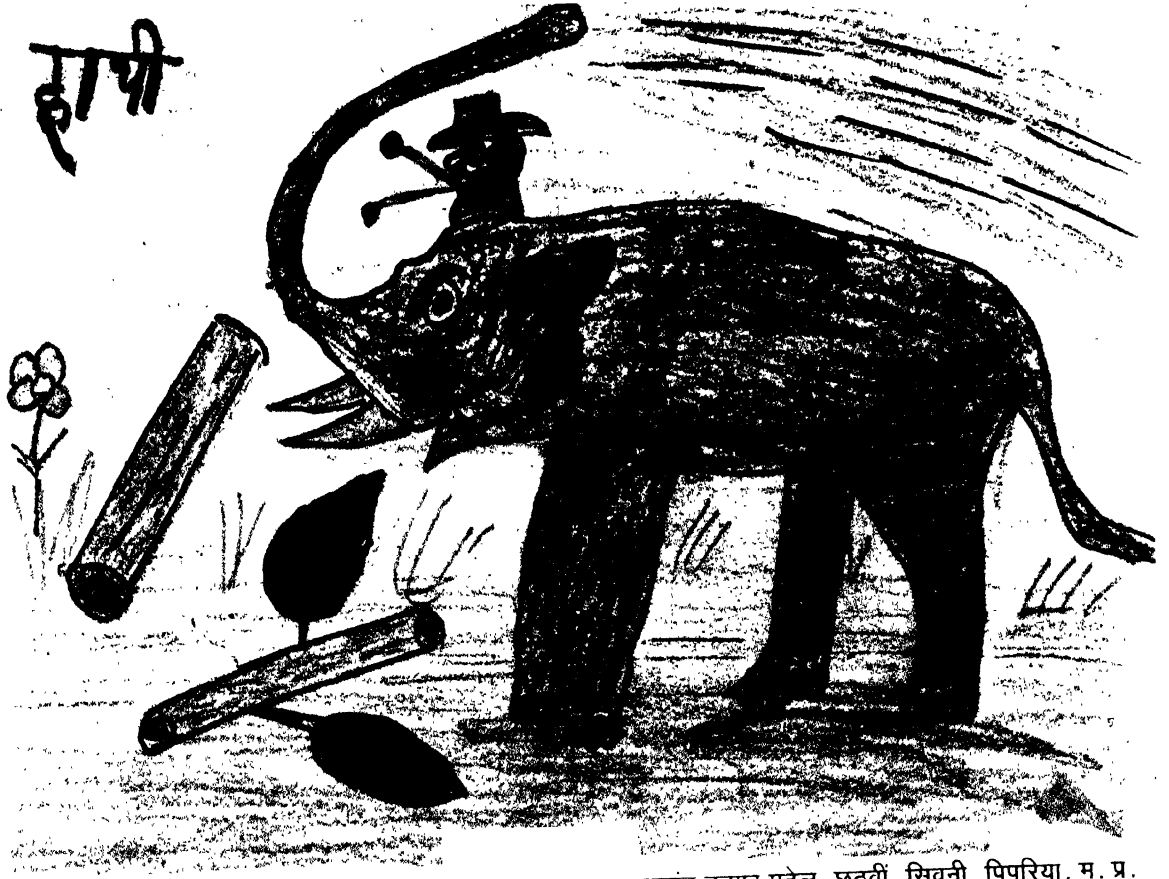
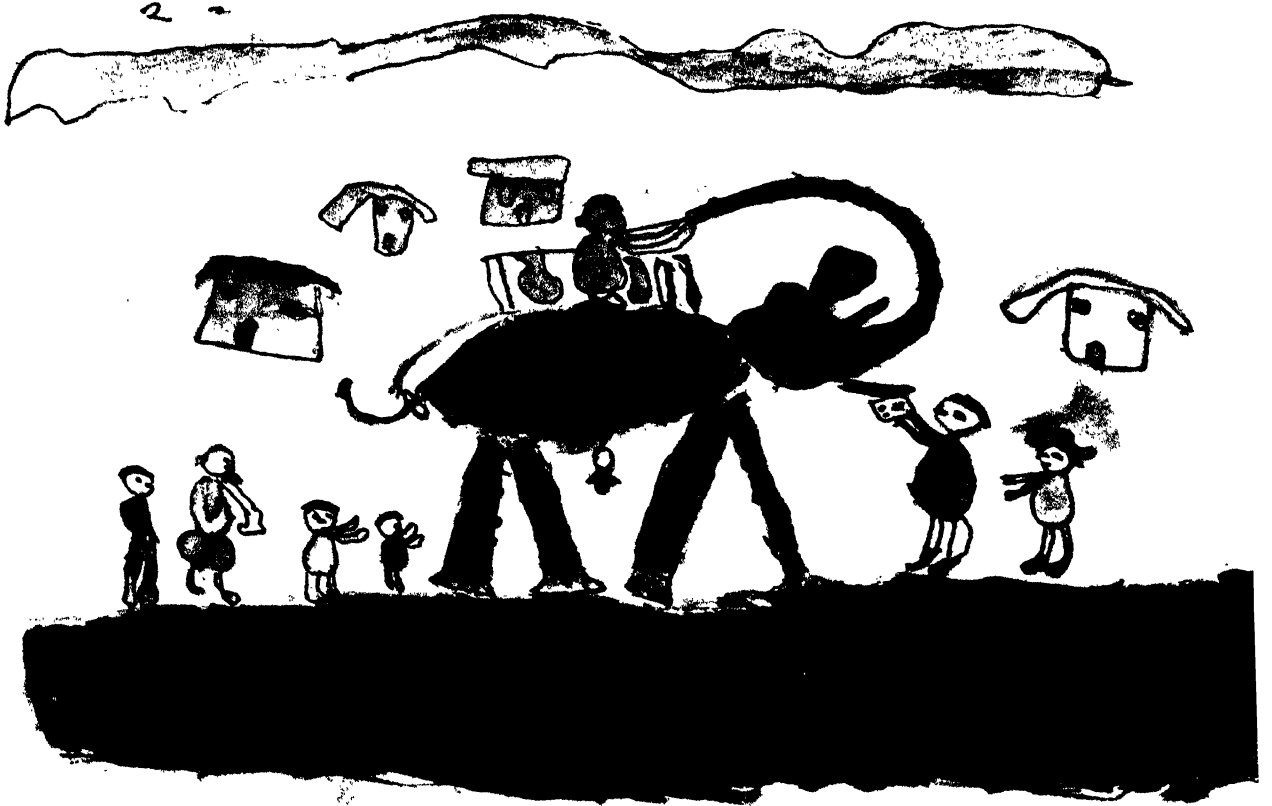




हाथी



आनंद कुमार पटेल, छठवीं, सिवनी, पिपरिया, म. प्र.



● अनुज चौहान, पहली, टिमरनी, होशंगाबाद, म. प्र.



# इस बार की बात . . .

**होली मुबारक हो तुम सब को!**

अरे, अरे घबराओ नहीं। हम रंग थोड़े ही डालेंगे। और डालना चाहें भी तो डालें कैसे? इतने दूर जो बैठे हैं। बस यही दुआ है कि तुम सब दोस्त मिल-जुलकर खूब मौज-मजे करो होली पर। और एक बढ़िया-सी होली की कविता पढ़ो।

होली के अलावा मार्च के महीने में एक खास दिन और है। 8 मार्च - औरतों का दिन, जिसे बड़े लोग अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस कहते हैं। क्या तुम जानते हो इस दिन के बारे में?

सदियों से समाज में आदमी और औरत के प्रति किए जाने वाले व्यवहार में बहुत-बहुत अन्तर रहा है। अपने यहाँ भी, समाज में, आस-पड़ोस में, अपने ही घरों में थोड़ा ध्यान से देखो तो पता चलेगा कि बचपन से एक लड़की और एक लड़के को पालने में किस तरह के फर्क किए जाते हैं। इसी के चलते लड़कियों पर तमाम बंदिशें लगाई जाती हैं, उन्हें अपने मन की पढ़ाई नहीं करने दी जाती, कहीं-कहीं तो पढ़ाई करने ही नहीं दी जाती। यहाँ तक ऐसी भी जगहें हैं हमारे देश में और देश के बाहर भी जहाँ लड़कियों का पैदा होना ही एक कलंक समझा जाता है। कई दफा तो उन्हें पैदा होते ही मार दिया जाता है।

अब तुम ही बताओ, क्या लड़कियाँ इस काबिल भी नहीं कि उन्हें जीने दिया जाए, लड़कों की तरह ही पढ़ने-लिखने और आगे बढ़ने के मौके दिए जाएँ?

तो हर साल 8 मार्च का दिन इन्हीं बातों की ओर ध्यान दिलाता है। यह दिन औरतों के साथ होने वाली ज़ोर-ज़बर्दस्ती के खिलाफ और उनकी ताकत और एकजुटता के सम्मान में मनाया जाता है।

वैसे तो यह बातें सिर्फ एक दिन याद करने की नहीं हैं। ज़रूरत इस बात की है कि हम सब इन बातों के बारे में सोचें, इन्हें समझें और दूसरों से भी बाँटें। और फिर यह कोशिश करें कि अपनी रोज़मर्रा की जिन्दगी में हर लड़की या औरत को भी वही जगह और सम्मान दें जिसकी वह हकदार है।

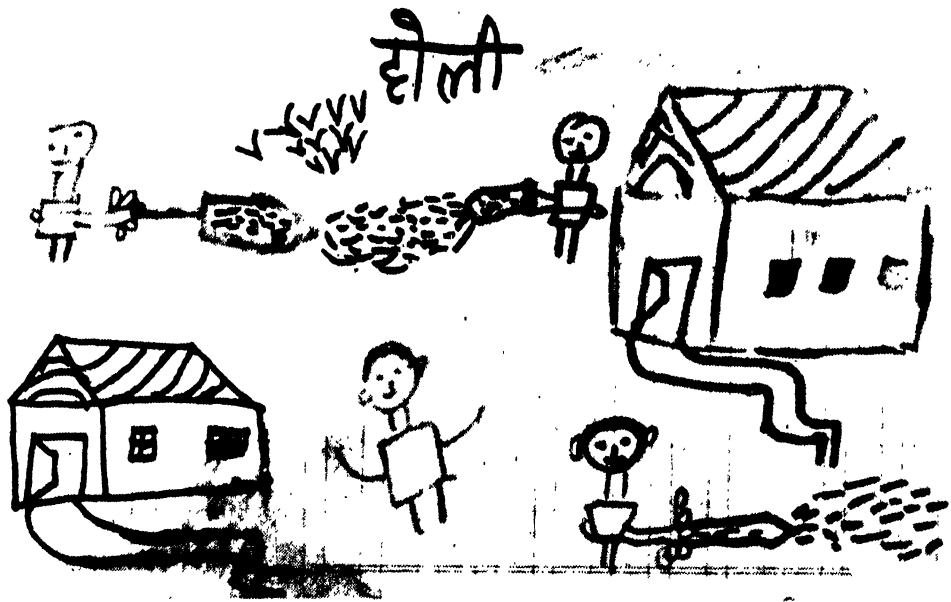
इस बार 'हमारी आवाज़' स्तम्भ में हमने कुछ हाई स्कूल की लड़कियों से बातचीत की। तुम भी पढ़ो। फिर सोचना कि तुम अपने जीवन में अपनी माँ, भाभी, बहन,

**2** सहेलियों के साथ कैसा व्यवहार करते हो या करती हो?



। सुपर्णा मंडल, आठवीं, भोपाल, म. प्र.





रमित मनवानी, पहली, भोपाल, म. प्र.

से काट लें

## चकमक का उपहार

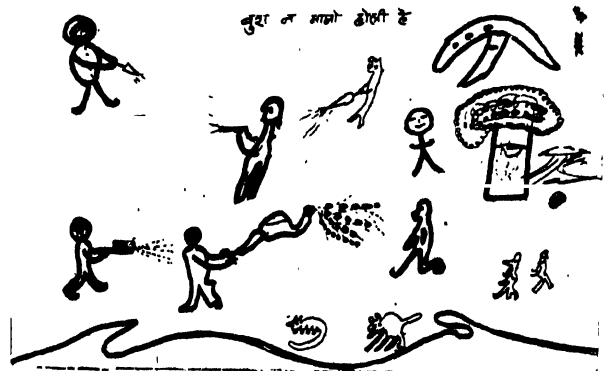
अगर आप चकमक का सदस्यता शुल्क भेज रहे हैं तो अपने किसी ऐसे परिचित/दोस्त/परिवारजन का पता यहाँ लिखें जिसे आप चकमक से परिचित कराना चाहते हों या चकमक का उपहार देना चाहते हों। हम उन्हें चकमक का एक अंक उपहार में भेजेंगे।

नाम .....

मोहल्ला  
डाकघर  
ज़िला  
पिन



● कुमुवकांत किरगी, राजनांदगाँव, म.प्र.



गोविंद सिंह चौहान, रामपुरा, मंदसौर, म. प्र.

में चकमक का नियमित पाठक हूँ, परन्तु एक पाठक के तौर पर मेरा यह पहला पत्र है। एक बाल विज्ञान पत्रिका के तौर पर यह मेरी पहली पसंद है। परन्तु इसमें कुछ सुधार की गुंजाइश है। मेरे कुछ सुझाव निम्नलिखित हैं।

1. चकमक में औसतन 40 पृष्ठ होते हैं, जो कम ही लगते हैं। पूरी पुस्तिका 15 मिनट में पढ़ ली जाती है। कृपया पृष्ठों की संख्या बढ़ाएँ। पृष्ठ लगभग 60 से 65 रखें।
2. सवालिराम, हमारे वृक्ष, कबाड़ का जुगाड़ आदि स्तम्भों को नियमित करें।
3. किसी कार्टून परिशिष्ट का आरम्भ करें। कुछ पहले तक चाचा चकमक दिया जाता था। वैसा ही कार्टून स्तम्भ शुरू करें।
4. प्रति तीन महीने में अथवा चार महीने में कोई नाटक दें।
5. विज्ञान के स्तम्भ भी नियमित करें। चकमक के विज्ञान आधारित लेख एक एनसायक्लोपीडिया की तरह कारगर होते हैं।
6. दैनिक जीवन में उपयोगी वस्तुओं पर शृंखला शुरू करें। इन सुझावों को अमल में लाने पर चकमक पूर्ण पत्रिका होगी। पृष्ठ योजना 60-65

आवरण - समसामयिक अथवा वैज्ञानिक चित्र।

पत्रिका परिचय व ... अंक में - 1 पृष्ठ।

मेरा पन्ना सदा की तरह - 7 पृष्ठ एवं पीछे का आवरण।

विज्ञान से सम्बंधित लेख - 6 पृष्ठ से 8 पृष्ठ।

इस बार की बात - 1 पृष्ठ।

पाठक लिखते हैं - 1 पृष्ठ।

दो कविताएँ - 2 पृष्ठ।

कहानी - 6 पृष्ठ।

विशेष कोई नाटक तीन या चार अंकों में एक बार - 7 पृष्ठ। (इसे पृष्ठ योजना में छोड़ा गया है)

धारावाहिक शृंखलाएँ - 8 पृष्ठ।

सवालिराम - 3 से 4 पृष्ठ।

हमारे वृक्ष - 1 पृष्ठ।

माथापच्ची - 2 पृष्ठ।

कार्टून परिशिष्ट व चकमक समाचार - 1 पृष्ठ।

खेल कागज़ का - 3 पृष्ठ।

वर्ग पहेली - 1 पृष्ठ।

विशेष - 5 पृष्ठ।

कबाड़ का जुगाड़ - 1 पृष्ठ।

दैनिक उपयोग की वस्तुएँ व उनका इतिहास एवं वे कैसे बनती हैं - 6 से 8 पृष्ठ।

विज्ञान के खेल, अंक के खेल अथवा विज्ञान के प्रयोग - 4 पृष्ठ।

किसी विषय पर आधारित सुन्दर चित्र - 1 पृष्ठ।

विज्ञापन - 2 पृष्ठ।

इस पृष्ठ योजना से 60-65 पृष्ठ में पत्रिका का अंक बेहतर होगा।

*पराग को इस पत्र का जवाब लिखकर पृछा गया था कि पृष्ठ संख्या बढ़ाने पर चकमक की कीमत क्या रखी जाए। पराग का फिर से पत्र आया।*

मैंने आपके कहे अनुसार पत्रिका की कीमत पर विचार किया। और पाया कि कीमत 8.00 रुपए से 9.00 रुपए के बीच रखनी चाहिए। वैसे पत्रिका की यह कीमत ज्यादा अवश्य होगी परन्तु सुधी पाठकों के लिए, पृष्ठों की संख्या बढ़ने के आगे यह भी कम होगी।

● पराग डांगे, आठवीं, रायपुर, म. प्र.

कुछ वर्षों पूर्व झाँसी में मेरा परिचय चकमक पत्रिका से हुआ था। बहुत पसन्द आई थी। वहाँ के कुछ बच्चों की रचनाएँ भेजी थीं जो प्रकाशित भी हुई थीं। अब मेरे अपने बच्चे भी कुछ रचने योग्य हो गए हैं। आज मैं अपनी दस वर्षीय पुत्री की एक कविता और उसकी तूलिका से बनी प्रकृति की छटा आपके पाम प्रकाशनार्थ भेज रही हूँ।

बहन की रचना को प्रकाशनार्थ जाते देख मेरा आठ वर्षीय छोटा बेटा भी अपनी कल्पना को कागज़ पर उतार लाया है। यह चित्र भी आपके पास प्रकाशनार्थ प्रेषित कर रही हूँ। आशा है बच्चों को प्रोत्साहन देंगे।

नीलम चन्द्रा, गाज़ीपुर, उ. प्र.



## होली आई

रंगों से भर-भरकर झोली  
निकल पड़ी बच्चों की टोली  
हे मस्ती इन पर छाई  
हे सब के मन को भाई  
होली आई!

हर ओर शोर हुड़दंगों का  
मंजीरा, ढफली, चंगों का  
रगड़ा, झगड़ा, हाथापाई  
व्यर्थ की होती लड़ाई  
होली आई!

गूँज रही हैंसी, किलकारी  
भोली सूरत लगती प्यारी,  
खुशियाँ जितनी भी पाई  
मिल-जुलकर आज लुटाई  
होली आई!

झूम-झूम कर नाचें, गाएँ  
मस्ती में सारे इठलाएँ  
निज मन की बगिया महकाई  
आज उमंगें तो बौराई  
होली आई!

□ अतुल गोस्वामी  
चित्र : हुताराम अधिकारी

# हाथी

हाथी के बारे में तुम क्या-क्या जानते हो? उसकी एक लम्बी सूँड़ होती है। दो लम्बे दाँत होते हैं। सूँपे जैसे बड़े-बड़े कान होते हैं। और, हाथी भारी-भरकम, खूब बड़ा जीव होता है। यही सब न! हम भी इतना ही जानते थे। फिर और ज़्यादा जानने की इच्छा हुई, कुछ जानकारी ढूँढी। तुम भी पढ़ो, इनमें से कई बातें तुम पहले से जानते होगे और कुछ बिल्कुल नई होंगी तुम्हारे लिए।

आज जो हाथी हम देखते हैं वो हजारों साल से हमारे साथ है। वैसे जब बड़े-बड़े जीव होते थे, करोड़ों साल पहले, तब भी हाथी होते थे। लेकिन तब इनका आकार छोटा होता था।

मुख्य रूप से दो तरह के हाथी होते हैं – एक एशियन हाथी जो भारत में पाया जाता है। और दूसरा अफ्रीकी हाथी। ये अफ्रीका में मिलता है।

एशिया में पाया जाने वाला हाथी, अफ्रीकी हाथी से थोड़ा छोटा होता है। अफ्रीकी हाथी घण्टों धूप में खड़े रह सकते हैं। जबकि एशिया में पाए जाने वाले हाथी ऐसा नहीं कर सकते, इसलिए वे पेड़ों की छाया में, जंगलों में रहते हैं।

हाथी की सूँड़ एक मजेदार चीज़ है। है न! अपनी सूँड़ में पानी भरकर हाथी पानी की बौछार कर देता है। हाथी सूँड़ से मोटे से मोटा लट्ठा उठाकर यहाँ से वहाँ रख सकता है। इसी सूँड़ से छोटा-सा पच्चीस पैसे का सिक्का तक सम्भालकर उठा लेता है। दरअसल हाथी की सूँड़ हाथी के शरीर का एक मुख्य अंग है। हाथी की सूँड़ उसकी नाक और ऊपरी होंठ से मिलकर बनी होती है। सूँड़ में हड्डी नहीं होती इसीलिए हाथी सूँड़ को किसी भी तरह से मोड़ लेते हैं।

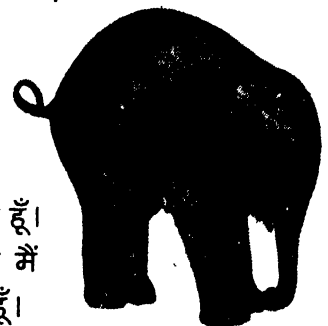
हाथी आमतौर पर झुण्ड में रहते हैं। झुण्ड में मादा हाथी और छोटे बच्चे होते हैं। बच्चे अपनी

माँ के साथ-साथ या उसके नीचे-नीचे चलते हैं। नर हाथी अलग झुण्ड बनाकर या अकेले घूमते हैं।

पूरा झुण्ड जब एक जगह से दूसरी जगह जाता है तो आगे एक हाथी जाकर टोह लेता है कि खतरा तो नहीं है। खतरा होने पर बहुत ही सावधानी से बहुत धीमे और ख़ास तरीके से अपने साथियों को आगाह करता है। खतरा नहीं है का संकेत मिलने पर ही झुण्ड आगे बढ़ता है।

हाथी पानी में तैरने और पहाड़ों पर चढ़ने में भी माहिर होते हैं। इन कामों में भी उनकी सूँड़ बहुत मदद करती है। हाथी की चाल बहुत ही शान्त और बिना आवाज़ की होती है। पैर भारी गद्दों की तरह मुलायम होते हैं। पैर के निचले हिस्से में ऊपर मोटी खाल और उसके भीतर एक तरह का नरम पदार्थ भरा रहता है, जिससे चलने में बिल्कुल आवाज़ नहीं होती।

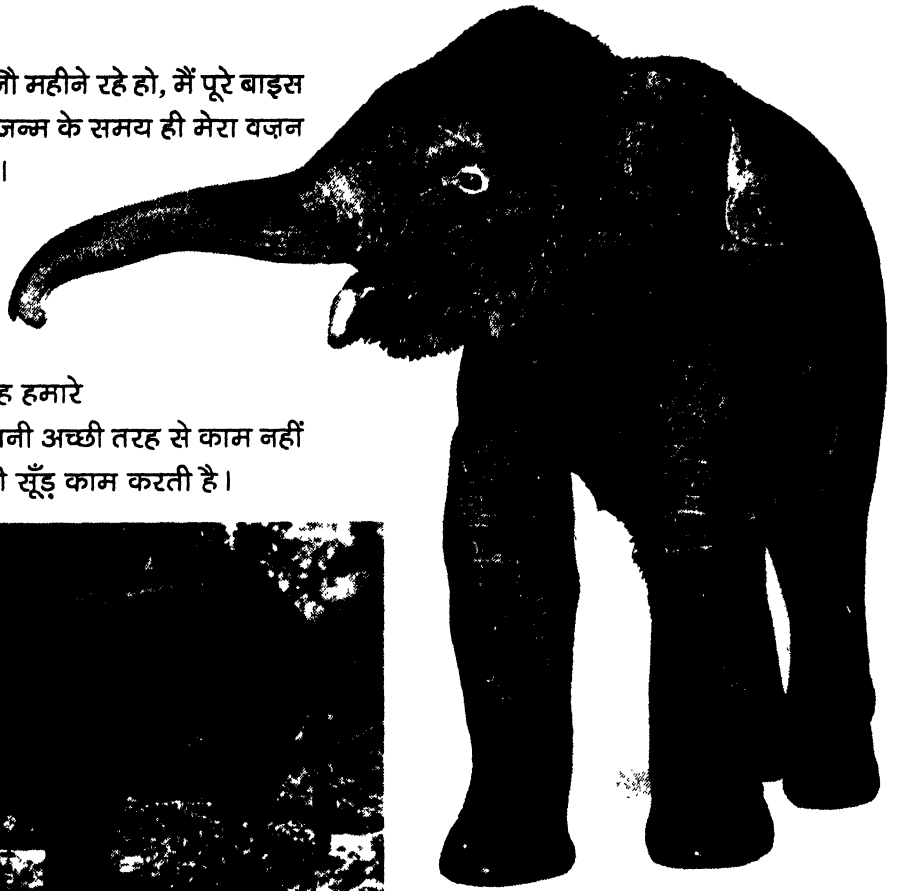
हम एक हाथी के बच्चे से मिले। तुम भी मिलना चाहोगे? तो मिलो और पढ़ो वो अपने बारे में क्या बता रहा है।



मैं एक छोटा-सा हाथी हूँ। अभी कुछ दिन पहले मैं इस दुनिया में आया हूँ।

जैसे तुम अपनी माँ के पेट में नौ महीने रहे हो, मैं पूरे बाइस महीने माँ के पेट में रहा हूँ। जन्म के समय ही मेरा वजन लगभग 100 किलोग्राम था।

हम छोटे, कम उम्र के हाथियों के शरीर पर बहुत रोम (बाल) होते हैं। सूँड़ भी छोटी होती हैं। हमारी सूँड़ सिर्फ हमारी नाक नहीं है, यह हमारे हाथ भी हैं। अभी मेरी सूँड़ उतनी अच्छी तरह से काम नहीं कर पाती जितनी मेरी माँ की सूँड़ काम करती है।



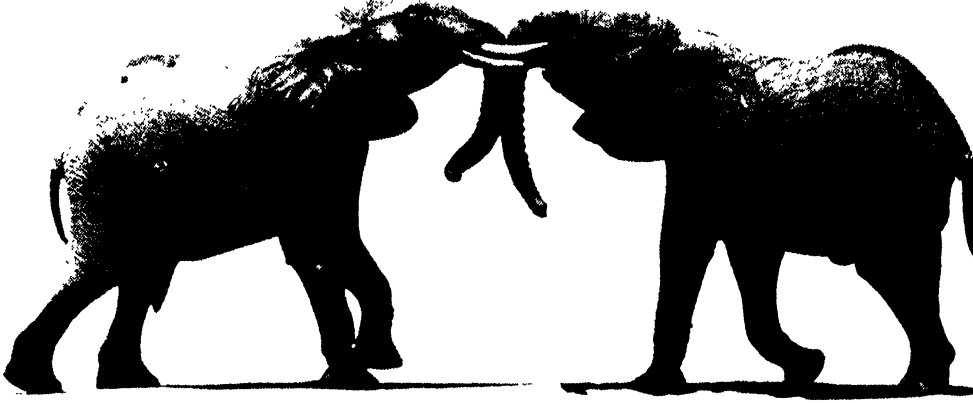
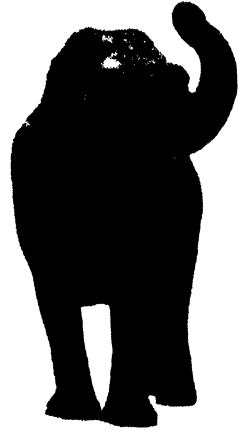
एक बार मैं अपनी माँ और बड़ी बहन के साथ पानी पीने गया तो कीचड़ की वजह से फिसलकर पानी में ही गिर पड़ा। मेरी माँ और बहन ने अपनी सूँड़ से मुझे बाहर निकाला।

अक्सर जब मेरी माँ नदी पार करती है। नदी के दोनों ओर कीचड़ से निकलने में माँ को मेरी मदद में बहुत समय लगाना पड़ता है। मेरी माँ अगर मुझे सहारा देकर न निकाले तो मेरी तो टाँग ही टूट जाए।



हमारी सूँड़ का यह आखिरी छोर, बिल्कुल तुम्हारी उँगलियों की तरह किसी छोटी से छोटी चीज़ को भी पकड़ सकता है। हमारे सम्बंधी जो अफ्रीका में रहते हैं, उनकी सूँड़ बड़ी होती है।

तुम अपने बड़ों को हाथ जोड़कर नमस्ते कहते हो हो न। इसी तरह हम भी जब अपनी सूँड़ को उठाकर माथे तक ले जाते हैं तो यह अंदाज़ होता है अपने से बड़ों को आदर देने का।



मेरे बड़े भाई कभी-कभी एक दूसरे से भिड़ जाते हैं।

वे सूँड़ में सूँड़ फँसाकर कोई प्यार नहीं जता रहे हैं बल्कि एक दूसरे की ताकत का अंदाज़ा लगा रहे हैं।



पत्तियाँ खाना मुझे बहुत बहुत पसन्द है। पेड़ों पर ऊँचाई से पत्तियाँ तोड़ने में मेरी सूँड़ बहुत मदद करती है।



सूँड़ थक गई है। उसे आराम देना भी तो ज़रूरी है।

## पहले कैसा था हाथ

आज जैसा हाथी हम देखते हैं वो क्या हमेशा से ऐसा ही था? नहीं, करोड़ों साल पहले हाथी बहुत छोटा होता था। हमें कुछ चित्र मिले जिनमें दिखाया गया है कि लगभग चार करोड़ साल से अब तक हाथियों का विकास किस तरह हुआ होगा।

सबसे पहले चित्र में हाथी की लम्बाई सिर्फ दो फीट है। यही सब जाति के हाथियों का शुरुआती रूप था। उसके बाद के चित्रों में देखो किस तरह हाथी में बदलाव होते गए।

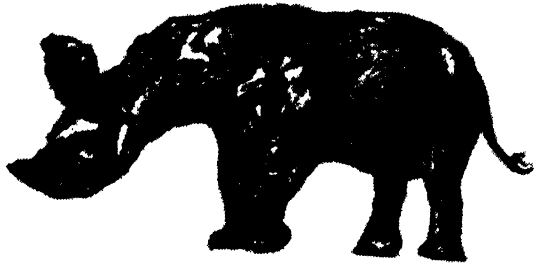
लगभग दो करोड़ साल पहले हाथी इस रूप में आ चुका था जो आज के हाथी से बहुत मिलता जुलता है। इसके बाद हाथी में अलग-अलग जगहों पर रहने के कारण अलग-अलग बदलाव हुए। जैसे किसी जगह की जलवायु के अनुसार उसकी खाल पर बाल होते हैं, और रंग भी उनकी रहने की जगह के हिसाब से अलग मिलता है।



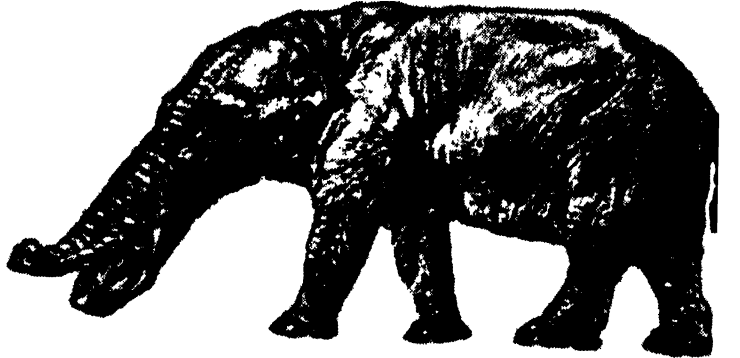
(1)



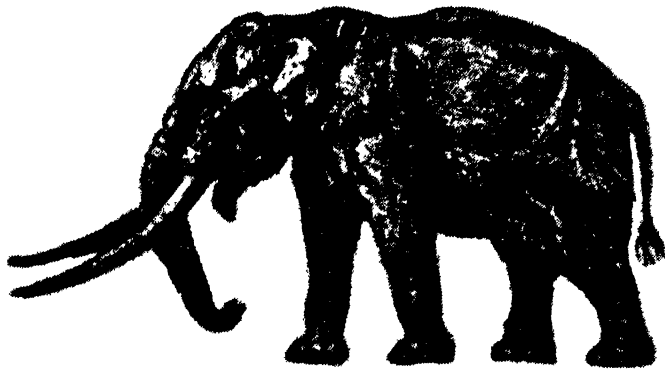
(2)



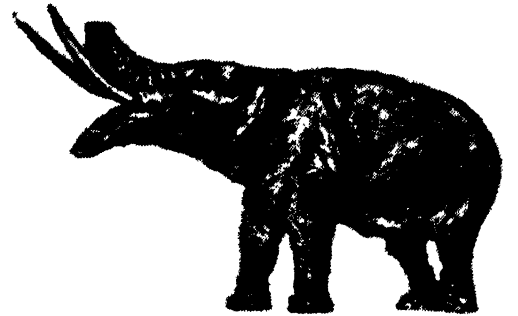
(6)



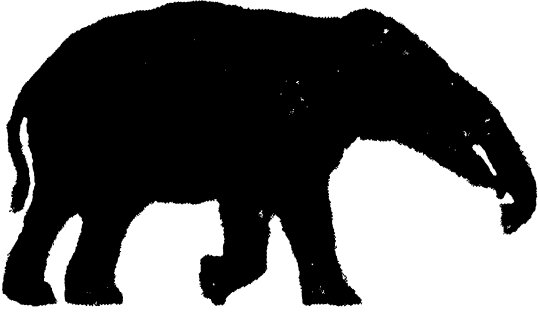
(5)



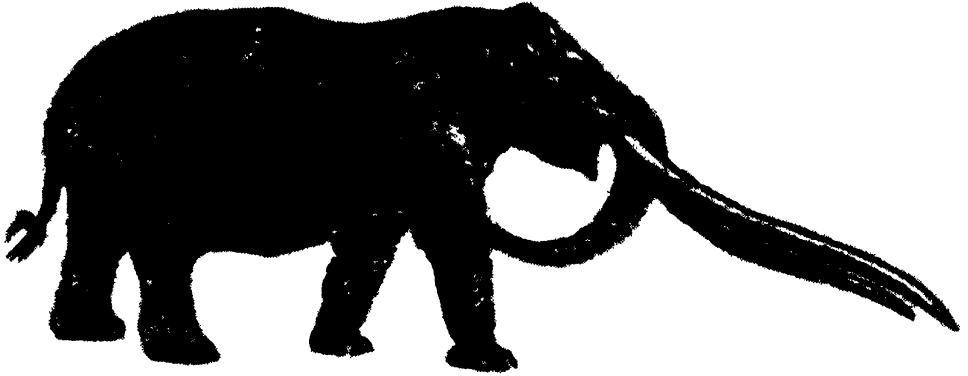
(8)



(7)



(3)



(4)

## हाथी बात कैसे करते हैं?

हाथी आपस में बात कैसे करते हैं इस के बारे में कैटी पायन नाम की एक महिला ने कुछ खोज की। एक बार कैटी को चिड़ियाघर में हाथी के पास जाने पर हवा में विशेष प्रकार का कम्पन महसूस हुआ। यह कम्पन हाथी से दूर जाने पर बंद हो जाता था, हालांकि वहाँ पर कोई और आवाज़ नहीं सुनाई दी। यह कम्पन कहाँ से आ रहे हैं यह भी पता नहीं लगा। फिर अचानक उन्हें ध्यान आया कि बचपन में चर्च में समूहगान के दौरान जब पियानो (एक बाजा) को भारी स्वरों में बजाया जाता था, तब भी ठीक ऐसे ही कम्पन महसूस होते थे जिन्हें सुना नहीं जा सकता था, केवल उनका आभास ही होता था।

कैटी को दोनों अनुभवों में कुछ समानता नज़र आई। वे फिर से चिड़ियाघर गईं और अपने साथ टेप रिकॉर्डर ले गईं। उन्होंने उन कम्पनों को रिकॉर्ड कर लिया। उस रिकार्डिंग को दुगनी गति से बजाया। तब उन्हें अस्पष्ट, भारी-सी गुड़गुड़ाहट जैसी सुनाई दी।

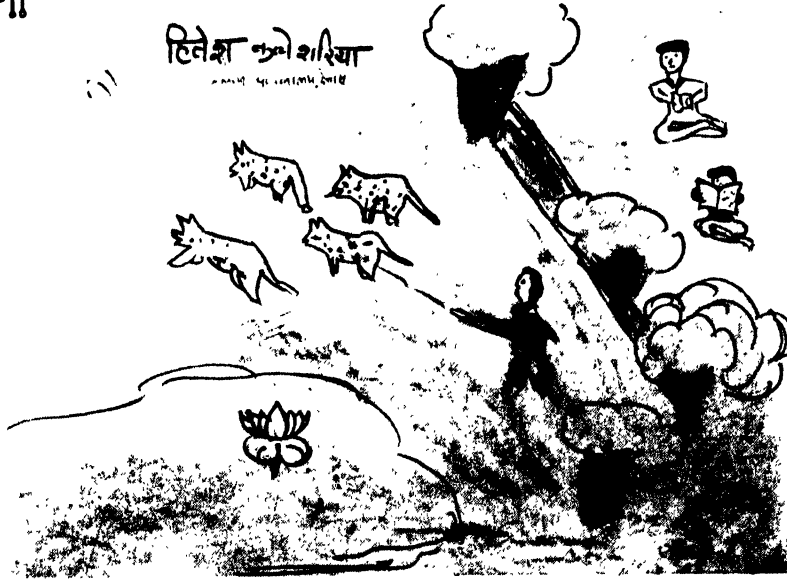
इसी से कैटी पायन ने खोज निकाला कि यह कम्पन ही हाथी की बातचीत हैं। जिस प्रकार व्हेल एवं डॉल्फिन समुद्र में सैकड़ों किलोमीटर तक पराश्रव्य ध्वनि (जो सीटी जैसी सुनाई देती है या महसूस की जा सकती है) द्वारा आपसी संचार करते हैं उसी तरह हाथी ज़मीन पर इन्फ्रासोनिक ध्वनि के माध्यम से बातें करते हैं। (इन्फ्रासोनिक ध्वनि से मतलब ऐसी आवाज़ जो हमारी सुनने की क्षमता से कम हो या जो आवाज़ें हमें सुनाई पड़ सकती हैं उससे बहुत धीमी आवाज़।)

अक्सर हाथियों का झुण्ड चलते-चलते अचानक रुक जाता है। सभी हाथी शांत होकर अपने कान खड़े कर किसी विशेष दिशा की ओर मोड़ लेते हैं, मानो वे कोई दूर से आने वाली आवाज़ को सुनने का प्रयास कर रहे हों। इसका कारण भी यही है, इस तरह हाथी दूर से आती हुई दूसरे हाथियों की आवाज़ (कम्पन) सुनते हैं।

(स्रोत से साभार)



## जन्म दिन का तोहफा



● हितेश कलेशरिया, सतवास, देवास, म. प्र.

मेरी बड़ी दीदी मैना का बर्थडे था। हम लोग पाण्डुका से गरियाबंद भूतेश्वरनाथ शिवलिंग देखने गए। इसे विश्व का दूसरा बड़ा शिवलिंग इस तरफ के लोग कहते हैं।

वहाँ से लौटते समय गरियाबंद और पाण्डुका के बीच थोड़ा घना जंगल पड़ता है। शाम के सात बजे, 20 मार्च का दिन था। यहाँ खूब ठंड पड़ रही

थी। हम लोग कार से आ रहे थे। साथ में दीदी, सोनू भैया, छोटू भैया, पापा-मम्मी, बड़े पापा और प्यारी मौसी नमीता भी थीं।

अचानक बारुका गाँव के पास हम लोगों को कार की लाइट में एक तेंदुआ व उसके तीन छोटे बच्चे सड़क पार करते दिखे। कार में हम लोग गाना सुन रहे थे। बड़े पापा से तेंदुए की आवाज़ सुनने व उसे देखने के लिए टेप बंद करने को कहा। उन्होंने गलती से आवाज़ कम करने के बजाय बढ़ा दी। जिससे तेंदुआ अपने बच्चों समेत जंगल के अंदर गायब हो गया। पर हम उस क्षण को आज नौ वर्ष बाद भी भूल नहीं पाते हैं। हम लोगों की तरफ से दीदी को वह बर्थ डे का सबसे सुन्दर और न भुलाने वाला तोहफा था।

● अनिमा, पाँचवीं, पाण्डुका,

## बूझो पहलियाँ

रातों में वो अक्सर आता  
कभी हँसाता कभी रुलाता  
दुनियाभर की सैर कराता  
बताओ वह क्या कहलाता

● रोशनआरा, धार, म. प्र.

रात को सोता दिनभर चलता  
फिर भी वह कभी न थकता  
पूर्व से पश्चिम को जाता  
खुदभी तपता सबको तपाता

● चंद्रकांत नाचनकर, सौंसर, छिंदवाड़ा, म. प्र.

यह पृष्ठ

 **sidhu**

LEASING & FINANCING CO. LTD

Phones

2914496

2933235

Fax

011-2930268

83 84 GOKHALE MARKET.

Delhi-110054

के सौजन्य

चक्रमक

मार्च, 1999

## मोनू



मैं एक लड़का हूँ। मगर मैं अच्छा हूँ या बुरा इस बात से मैं बिल्कुल अंजान हूँ। लेकिन सब मुझे बुरा समझते हैं। यह कहानी जो मैं आप को सुना रहा हूँ, वह काल्पनिक नहीं वास्तविक है।

10.8.98 तारीख थी। दोपहर का समय था। मैं अपने स्कूल में पढ़ रहा था। पहला पीरियड हिन्दी का व दूसरा इंग्लिश का लगा। मगर तीसरा पीरियड विज्ञान का लगा तो मैडम क्लास में आईं। सभी बैठ गए मैडम के कहने पर। मैडम ने अपने विषय की चर्चा की। गाइड निकालकर प्रश्न-उत्तर लिखाना शुरू किए।

एक लड़के ने अचानक कुछ बोला और मैडम ने मुझे खड़ा किया क्योंकि वह लड़का मेरे पास बैठा था। मैडम ने सभी से पूछा कि यह लड़का बात कर रहा था ?

सभी ने मेरी तरफ इशारा किया। मैंने मैडम से बहुत कहा कि मैडम मैंने बात नहीं की, यह लोग झूठ बोल रहे हैं। लेकिन मैडम ने मेरी एक न सुनी और मुझे एक जोर से चाँटा मारा। मैंने फिर एक शब्द न बोला। मैं चुपचाप बैठ गया। और जो मैडम ने लिखवाया वो भी नहीं लिखा। क्योंकि मैं इतने गुस्से में था कि वह मैं ही जानता हूँ।

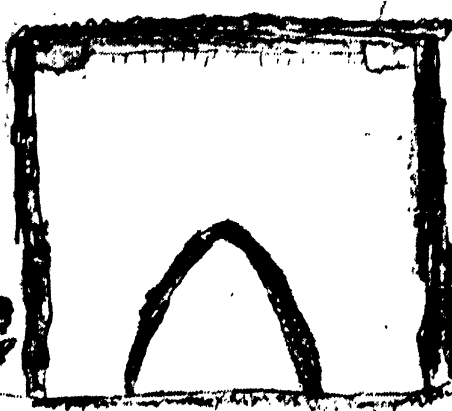
क्या मेरा बात नहीं करने का यही नतीजा निकला। फिर मैंने रोज बात करना शुरू कर दिया। तो मैडम ने मुझसे कुछ न कहा। इसमें मैडम की ही गलती है, यह मैं नहीं कह सकता, क्योंकि गलती बच्चों की भी थी।

● मोनू तोमर, नौवीं, ग्वालियर, म.प्र.

## सुन्दर सुन्दर प्यारे फूल

हरे लाल पीले फूल  
देखो अपनी मस्ती में  
हवा में इटलाते फूल  
सुन्दर सुन्दर प्यारे फूल  
कभी तो हैं शर्माते फूल  
कभी तो हैं लहराते फूल  
देखो अपनी मस्ती में  
बगिया को महकाते फूल  
सुन्दर सुन्दर प्यारे फूल

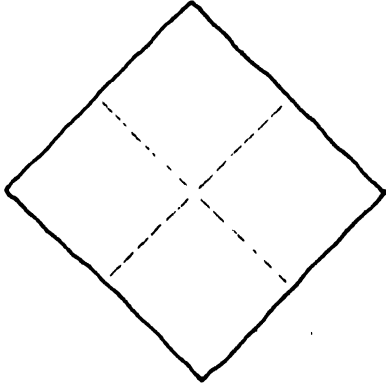
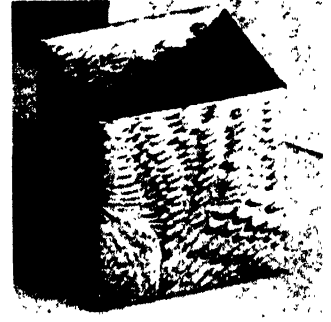
● साक्षी मिश्रा, चौथी, डिंडोरी,  
मंडला, म. प्र.



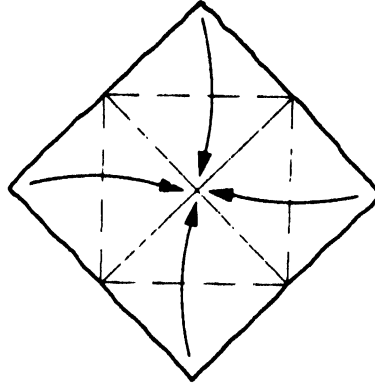
● अमिता सिलोमिना, भोपाल, म.प्र.

# खेल कागज का

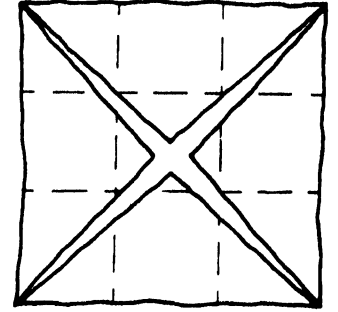
## डिब्बा



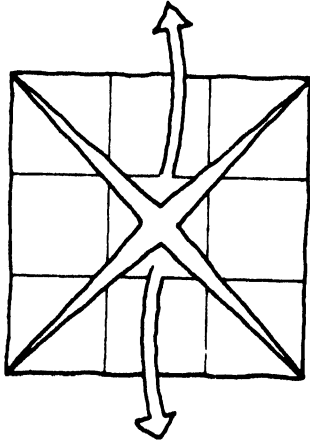
1. एक वर्गाकार कागज लो। दूटी रेखाओं पर से मोड़ बनाकर खोल लो।



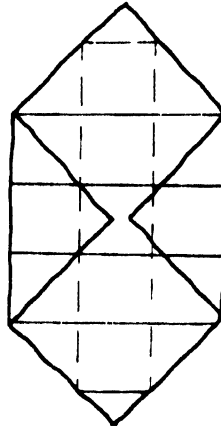
2. अब इस चित्र में दिखाई दे रही दूटी रेखाओं पर से तीर की दिशा में मोड़ बनाओ।



3. इस तरह। यहाँ चित्र को बड़ा करके दिखाया गया है। इस चित्र में दो आड़ी और दो खड़ी दूटी रेखाएँ दिखाई दे रही हैं। इन रेखाओं पर से मोड़ बनाकर खोल लो।



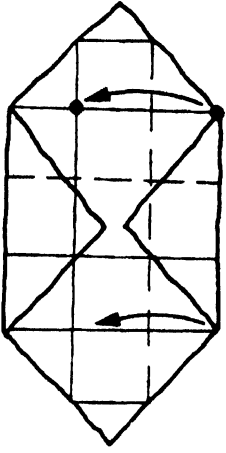
4. तुम्हारे पास के कागज में भी इस तरह के मोड़ के निशान बन जाएँगे। अब ऊपर नीचे की परतों को तीर की दिशा में खोल लो।



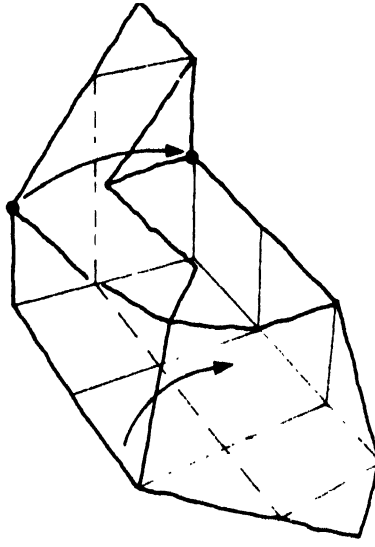
5. ऐसी आकृति बन जाएगी। खड़ी दूटी रेखाओं पर से एक बार और मोड़ बनाकर खोल लो।



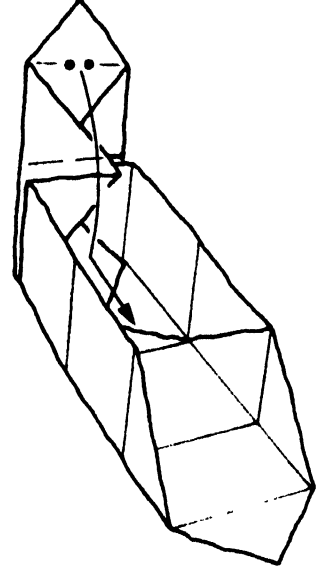
6. आकृति को पलट लो। दूटी रेखाओं पर से मोड़ बनाकर खोल लो।



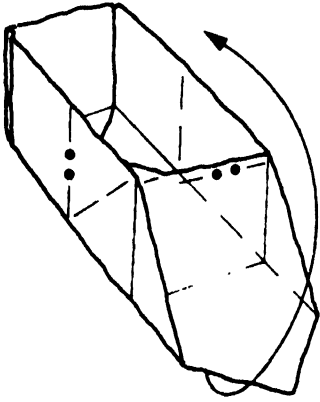
आकृति को पलट लो। एक आड़ी और एक खड़ी टूटी रेखा इस चित्र में दिख रही है। इन पर से मोड़ बनाते हुए बिंदु से बिंदु मिलाओ।



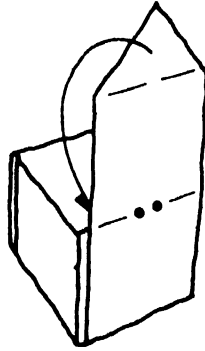
8. इस तरह की आकृति बनेगी। फिर बाईं ओर भी ऐसे ही बिंदु से बिंदु मिलाते हुए मोड़ो।



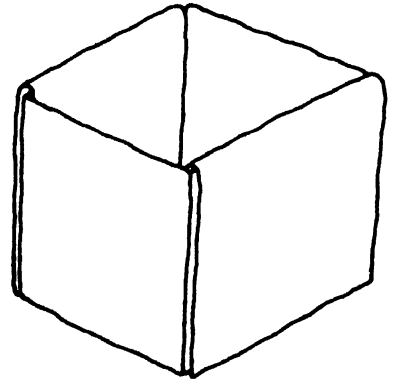
9. देखो दोनों ओर दीवार -सी खड़ी हो गई। अब सबसे ऊपरी कोने को मोड़ते हुए तीर की दिशा में नीचे ले आओ।



10. अब तक तो तुम समझ ही गए होंगे कि डिब्बे का एक हिस्सा बन गया है। इसी तरह दूसरा हिस्सा भी मोड़ लो।



11. अंत में बची इस ऊपरी परत को भी नीचे की ओर लेजाकर मोड़ लो।

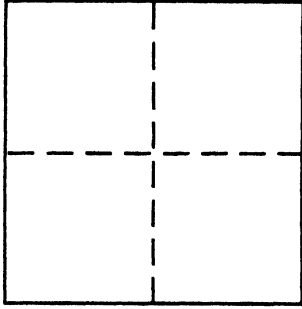


12. बस बन गया डिब्बा।

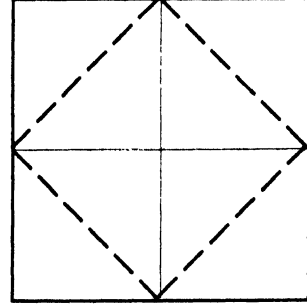
17

डिब्बे का अन्ततम अंश के लिए  
पहले वाले चरण के अनुसार ही  
संज्ञा के अनुसार अन्ततम अंश के लिए  
संज्ञा के अनुसार अन्ततम अंश के लिए

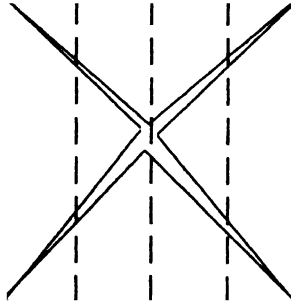
ये जो तुम्हारा डिब्बा बना है, ये किस तरह का है? यह एक घनाकार डिब्बा है। मतलब यह कि इस डिब्बे की सभी सतहें वर्गाकार हैं। अब अगर तुम बनाने के तरीके में थोड़ा-सा बदलाव कर दो तो डिब्बे का आकार बदल जाएगा। देखो कैसे -



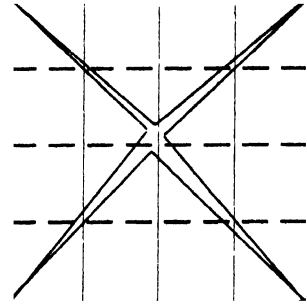
1. एक वर्गाकार कागज़ लो। टूटी रेखाओं पर से मोड़ बनाकर खोल लो।



2. अब इस चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखाओं पर से तीर की दिशा में मोड़ बनाओ।

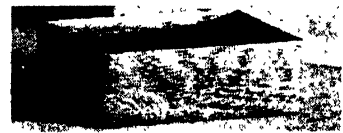


3. इस तरह। यहाँ चित्र को बड़ा करके दिखाया गया है। इस चित्र में तीन खड़ी टूटी रेखाएँ दिखाई दे रही हैं। इन रेखाओं पर से मोड़ बनाकर खाल लो।



4. इस चित्र में तीन आड़ी टूटी रेखाएँ दिखाई दे रही हैं। इन रेखाओं पर से मोड़ बनाकर खोल लो।

बस यही अन्तर है डिब्बा बनाने में। अब आगे वही सब करना है जो घनाकार डिब्बे में किया था। इतना अन्तर करके डिब्बा बनाकर देखो, डिब्बे में क्या फ़र्क दिखाई देता है।



## सच्ची मित्रता

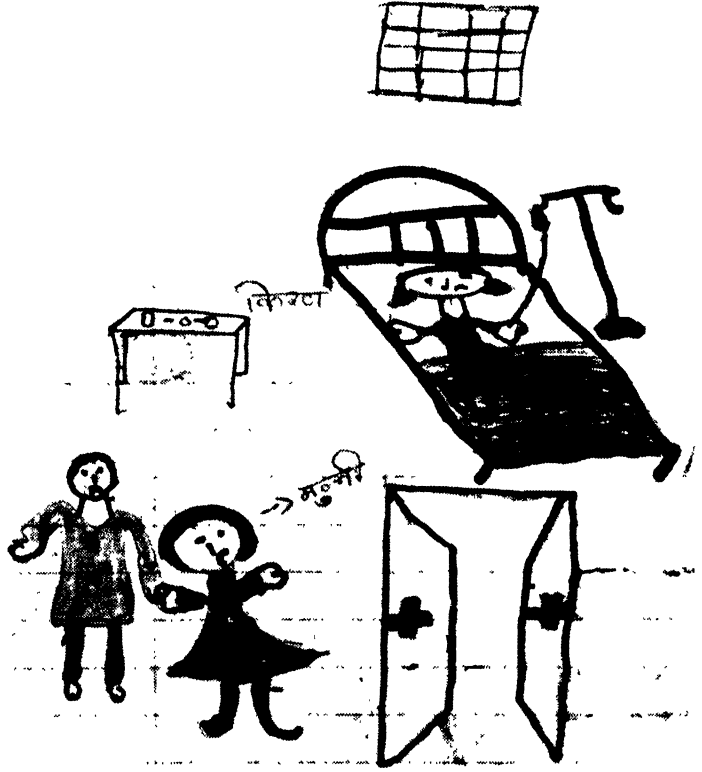


एक लड़की थी। उसका नाम मुन्नी था। वह बहुत पढ़ती और खेलती थी। एक दिन उसकी दोस्त की तबीयत ख़राब हो गई। वह खूब रोई।

उसकी माँ ने उसे समझाया कि मुन्नी तुम्हारी दोस्त ठीक हो जाएगी। दूसरे दिन उसकी दोस्त किरण आई तो वह खुश हो गई। वह किरण से बोली कि मैं तुम्हारे बीमार होने की बात सुनकर बहुत दुखी हुई। उसने बताया कि वह इतनी बीमार हो गई थी कि उसे हॉस्पिटल में दो बोटलें लगीं। फिर किरण अपने घर चली गई। दूसरे दिन किरण स्कूल नहीं आई।

मुन्नी ने अपने पिताजी से कहा कि मुझे किरण के पास जाना है। उसके पिताजी उसे किरण के पास ले गए। वहाँ मुन्नी और उसके पिताजी ने देखा कि

किरण बिस्तर पर लेटी है और उसे बोटल चढ़ रही है। मुन्नी बहुत रोई। मुन्नी रोज़ हॉस्पिटल जाती और किरण का टाइम पास कराती। एक दिन किरण ठीक हो गई। उस दिन मुन्नी बड़ी खुश हुई। उसने किरण के लिए कई प्रकार के उपहार खरीदे। किरण उपहार पाकर खुश हुई।



उस दिन मुन्नी की माता का जन्म दिन था। और मुन्नी ने किरण को बुलाया था। और उसके माता-पिता को भी बुलाया था। लेकिन किरण और उसके माता-पिता नहीं आए। किरण के माता-पिता उसे होस्टल में छोड़कर चले गए। किरण मुन्नी के पास गई और उसे बताया कि मेरे माता-पिता मुझे होस्टल में छोड़कर चले गए हैं। उसकी माँ का ट्रांसफर दिल्ली हो गया है। मेरी माता मुझे होस्टल से जब ले जाएगी तुम मुझसे मिलने ज़रूर आना।

(चित्र और रचना एक ही बच्चे की है पर नाम पता कुछ नहीं लिखा)

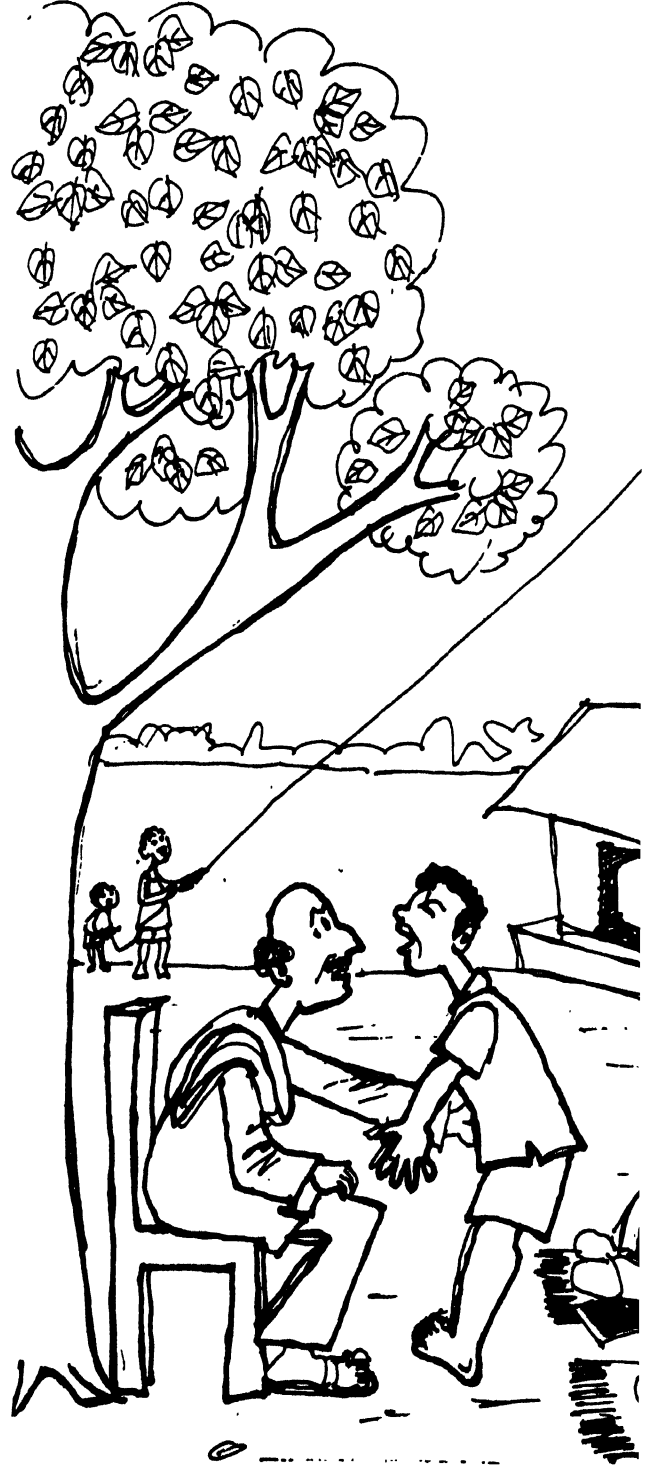


यह शृंखला शिक्षक दिवस से यानी सितम्बर, 98 से छप रही है। अब तक तुमने कई लोगों के बचपन की यादें पढ़ी। तुम भी अपने माँ-पिताजी से और दूसरे बड़े लोगों से कहो, कि वे भी अपने शिक्षकों के बारे याद करके कुछ लिखें।

**बात** उन दिनों की है जब मैं छठवी में पढ़ता था। यानि कि माध्यमिक स्तर की कक्षाओं की पहली सीढ़ी। अभी दो चार दिन ही हुए थे स्कूल जाते, क्लासें लगती नहीं थीं, क्योंकि लगभग सभी शिक्षक बच्चों के प्रवेश में लगे रहते थे। एक दिन संस्कृत के टीचर क्लास में पधारे और सारी कक्षा खड़ी हो गई। सरजी तो बैठ गए पर हमें खड़ा ही रखा। हर एक से संस्कृत पढ़वाते, नाम पूछते और कहते, "सिट डाऊन"। जो ना पढ़ पाता उसे खड़ा ही रहने देते। जब सब बच्चे पढ़ चुके होते तो शेष खड़े रह गए बच्चों से एक दूसरे को पाँच-पाँच मुक्के लगवाते। जो छात्र अपने किसी मित्र को धीरे-धीरे मुक्का मारता, तो सर कहते कि, "आ मैं तुझे मारना सिखाऊँ" और संस्कृत के टीचर उसकी वो मस्त धुनाई करते कि नानी याद आ जाती थी। ये उनका रोज़ का धन्धा था। कोई भी काम नहीं किया यानि आज धुनाई पक्की।

एक दिन श्लोक पूछे। याद करने को उन्होंने पहले ही बोल रखा था। श्लोक? भला हम पंडित तो थे नहीं, जो सरजी कहें और हम शुरू हो जाएँ। सारी क्लास अटक गई। सिर्फ लड़कियाँ बाज़ी मार गईं। क्योंकि हम कक्षा में फुदकते रहते थे।

खैर! सरजी ने लड़कियों से हमें पिटवाया। जी नहीं भरा तो एक-एक करके हमें अपने पास बुलाने लगे। कमर के ऊपर की नरम खाल में उन्होंने ना जाने ऐसी कौन सी कमज़ोर नस ढूँढ ली। वे उसे



# शिक्षक



पकड़कर दबाते और हमारा वज़न पंजों पर चला जाता। और पीछे से उठकर हम पंजों के बल खड़े हो जाते थे। तब सरजी ऐसी चाबी घुमाते कि हम आह ऊह करते हुए कभी इधर झुकते, कभी उधर। "सर कल याद कर लूँगा," सुनने के बाद ही उनका हाथ छूटता था।

इस प्रवृत्ति से हटकर के थे एक और गणित के टीचर। गणित इतने प्यार से पढ़ाते थे, जैसे हिन्दी पढ़ा रहे हों। सूत्र और परिभाषा अध्याय शुरू होने से पहले रटी होना यानि रटी होना। इसमें वे कोई ढील नहीं देते थे। मैं उनके द्वारा दिए गए सभी होमवर्क करता था इसलिए वे मुझे पसंद करते थे। कोई भी काम हो, "चम्पा इधर आ", "बेंत ला", "चम्पा पानी पिला।"

एक दिन उनकी तबीयत ठीक नहीं थी। फिर भी पीरियड में आ धमके। मुझे खड़ा किया। "चम्पा गणित पढ़ा।" मेरी सिट्टी पिट्टी गुम। "सर मैं और गणित," मैं बोला। "अबे खड़ा तो हो। मैं बोलता जाऊँगा तू लिखता जाना", सर जी फरमाए। बस फिर क्या था। मेरे पढ़ाने की पहली क्लास शुरू हुई। सर गणित बोलते, मैं उसे बोर्ड पर हल करता। शुरू-शुरू में हाथ काँपे फिर थोड़ा साहस बढ़ा। अब तो जब भी सर आलस खा जाते, मुझे खड़ा करते और वहीं उनकी पुरानी लीला शुरू कर देते। उनके इस तरह पढ़ाने का प्रभाव था कि आठवीं की बोर्ड परीक्षा में मुझे तीन विषयों गणित, विज्ञान, हिन्दी में योग्यता के अलावा 73% अंक भी आए थे।

जब राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा का बुलावा आया तो सरजी की पढ़ाई की ही कृपा का आभास हुआ। इस परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर सर ने मुझे बधाई दी और मेरी मिसाल भी। सरजी की एक बात तो आज भी याद आती है। वो ये कि वे हर शनिवार को बाल सभा करवाते थे और अपने स्वयं के रुपयों से खरीदे हुए ईनाम भी बच्चों में बाँटते थे। वैसे तो और शिक्षक भी थे, पर उन दोनों का प्रभाव आज भी हमारे ऊपर बना हुआ लगता है।

□ चम्पालाल कुरावाहा विजय  
हिरनखेड़ा, होशंगाबाद

चित्र : शिवेन्द्र पांडिया

## मेरी कहानी

मैं छह वर्ष पहले मम्मी, पापा और दो भाई, एक बहन के साथ दिल्ली आई थी। मैं नौ साल की थी तब मैं गाँव के एक स्कूल में तीसरी कक्षा में पढ़ती थी। दिल्ली में आकर मेरे मम्मी-पापा विकासपुरी झुग्गी बस्ती में रहने लगे। मेरे मम्मी पापा दोनों अनपढ़ थे। मेरे पापा जी रिक्शा चलाते थे और मम्मी कोठियों में काम करती थी।

मेरा नाम स्कूल में लिखाने ले गए तो मैडम ने मेरा नाम पहली कक्षा में लिखा क्योंकि मेरे पापा को कुछ भी पता नहीं था। हम लोग पहली बार दिल्ली आए थे। हम लोगों को दिल्ली की भाषा समझ नहीं आती थी।

मैं रोज़ स्कूल जाने लगी क्योंकि मुझे पढ़ाई में बहुत रुचि है। पहली से चौथी तक मैं अपनी कक्षा में प्रथम आती रही। इसी बीच मेरी शादी हो गई, क्योंकि देखने में मैं बड़ी लगने लगी थी। समाज में कुरीति और कुप्रथा के कारण लोग समझते हैं कि गरीब घर की लड़की बड़ी होने पर खराब हो जाती है। इसलिए मेरी शादी कर दी गई। फिर भी मैं अपनी पढ़ाई में लगी रही।

अभी मैं पाँचवीं कक्षा में पढ़ रही हूँ। मैं अपनी मेहनत और लगन से मैं कुछ करना और कुछ बनना चाहती थी। पर कुछ भी नहीं कर सकी। मैंने सोचा था कि ओपन स्कूल से आठवीं की परीक्षा दूँगी। लेकिन इसी बीच मेरे पापा जी अचानक चल बसे। जिससे मेरी पढ़ाई में बाधा आई।

अब मेरी मम्मी के ऊपर सारा भार आ गया है। मैं हगाई के कारण घर का खर्च पूरा नहीं होता।



● कैवलजीत कौर, आठवीं, भोपाल, म. प्र.

इसलिए मेरी छोटी बहन को भी कोठी में काम करने के लिए भेजने लगे। अब किसी तरह खर्च पूरा होता है। लेकिन बीच में कोई बीमार पड़ जाता है तो कर्ज़ लेना पड़ता है। कभी-कभी डर लगता है कि मैं पढ़ नहीं पाऊँगी। मैं जबरजस्ती पढ़ रही हूँ क्योंकि मेरे ससुराल वाले मना कर रहे हैं। वे लोग समझते हैं कि लड़की स्कूल जाने से खराब हो जाती है।

मेरी कहानी को और लोगों तक पहुँचाएँ ताकि मेरी जैसी और लड़कियों की ज़िंदगी में सुधार हो।

● कल्याणी पासवान, पाँचवीं, विकासपुरी, नई दिल्ली

## माँ

कितना ख्याल करती है माँ हमारी  
बदले में है जिसके ज़िंदगी कम हमारी  
वो अच्छी बातें, वो अच्छी तहज़ीब सिखाना  
वो आँगन में लाड़-प्यार से गोदी में बिठाना  
हर अच्छी बातों को बताना, हर बुरी बातों से बचाना।  
वो अच्छाई बुराई का फ़र्क बताती है  
अब तो बस एक ही तमन्ना बाकी है  
होज़ाए कहीं से दीदार ऐ माँ मेरी  
हो गए बहुत दिन तेरी गोद में सोए हुए  
हो गए बहुत दिन तुझे अपनी तकलीफ़ बताकर रोए हुए।  
तेरे आँचल में छुपकर दो पल सुकून से रह जाँ हँम  
जी करता है इसी पल तेरे पास उड़कर पहुँच जाँ हँम।

● नाज़िया तसलीम, आठवीं, तालिमाबाद, नई दिल्ली



। शीतल, लखनऊ, उ, प्र. 23

इस बार हमने बातचीत की, लड़की होने के बारे में, कुछ लड़कियों से। कि वो क्या सोचती हैं, कैसा व्यवहार होता है उनके साथ उनके घर में, और कैसा वो चाहती हैं?



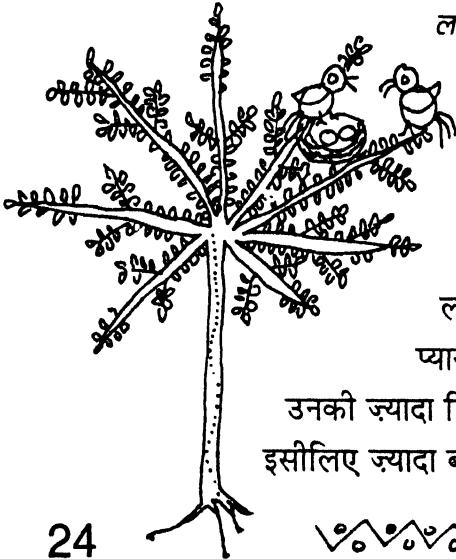
तुम लड़की हो, इस बारे में क्या सोचती हो?

“मैं लड़की हूँ यह मुझे अच्छा लगता है। जब कभी कहीं आने जाने पर रोक लगाई जाती है, तब कभी-कभी लगता है लड़का होती तो अच्छा रहता।”

तुमसे और तुम्हारे भाई से घर में एक जैसा व्यवहार किया जाता है?

“भाई को बाहर आने जाने पर कोई रोक नहीं है। मैं अगर अपनी सहेली के यहाँ जाकर शाम को पढ़ाई करना चाहूँ तो नहीं जा सकती। लेकिन भाई अगर देर रात तक भी अपने दोस्त के यहाँ से वापस आए तो कुछ नहीं।”

“माता-पिता टोकते हैं लड़कों को भी, लड़कियों को भी। एक सीमा तक बंधन होना भी चाहिए। लेकिन बंधन में फर्क नहीं होना चाहिए।”



लड़के और लड़कियों में इस तरह का अलग-अलग व्यवहार क्यों किया जाता है?

“माता-पिता लड़कियों से ज्यादा प्यार करते हैं इसलिए उनकी ज़्यादा फिक्र करते हैं और इसीलिए ज़्यादा बंदिश लगाते हैं।”

“यह सही नहीं है। लड़कों को ज़्यादा छूट दी जाती है। यह ठीक तो नहीं, पर ऐसा ही है। क्या करें।”

घर के बाहर तुम्हारे साथ जो व्यवहार होता है उसके बारे में क्या सोचती हो?



चित्र : अंजु सिंह

“ट्यूशन से घर लौटते हुए मुझे एक लड़का हमेशा परेशान करता था। एक दिन मैंने उसकी चप्पल से पिटाई कर दी। घर जाकर माँ को बताया तो माँ ने मुझे डाँटा।”

तुम जो पढ़ना चाहती हो उसकी छूट होती है?

“कम्प्यूटर कोर्स करना हो तो कहा जाता है कि क्या करोगी, इससे अच्छा इतने पैसों से तुम्हारे लिए कान की बाली बनवा देंगे। बाद में तुम्हारे ही काम आएँगी।”

तुम और तुम्हारे भाई घर में माँ के काम में हाथ बँटाते हो?

“घर के काम हम करते हैं, भाई नहीं करते। माँ भी हमें ही कहती है





कि तुम क्यों भाई के काम नहीं कर सकतीं।”

“हमारे यहाँ तो ऐसा नहीं होता। भाई भी काम करते हैं पर उन्हें बोलना पड़ता है। जबकि हम खुद ही काम में लग जाते हैं।”

“लेकिन लड़के क्यों करें

ऐसे काम, जो लड़कियों के काम

हैं। ऐसी ही परम्परा है हमारी कि कुछ काम लड़कियों के तो कुछ लड़कों के।”

“फिर तो पर्दे में रहना चाहिए। पर्दा भी तो हमारी ही परम्परा थी। पर वह प्रथा आज के हिसाब से ठीक नहीं थी तो टूट गई न! परम्पराएँ ठीक न हों, तो तोड़ी भी जा सकती हैं।”



आज जो लड़कियों की स्थिति है, उसके बारे में क्या सोचती हो?

“लड़कों को ज्यादा आजादी है। लड़कियों को बंधन में रखा जाता है। घूमना फिरना, अपने मन का कुछ करना यह सब हमारे लिए नहीं है।”

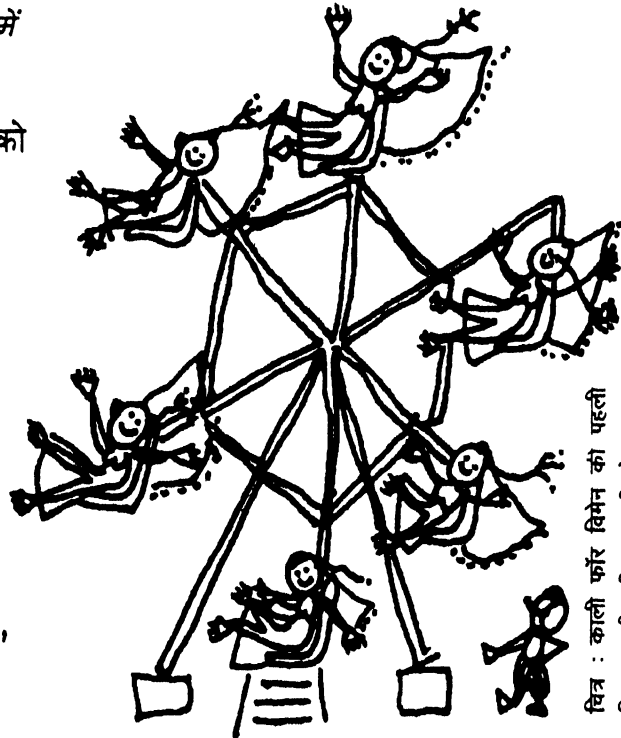
“आस-पड़ोस वाले क्या कहेंगे इस डर से घर वाले ज्यादा बंधन में रखते हैं। आस पड़ोस वाले तो कहते ही हैं, लेकिन हमें अपने आपको ऐसा बनाना चाहिए कि हम कोई गलत काम न करें।”

“हमारे माता-पिता हम पर विश्वास करते हैं इसलिए हमें कहीं भी आने जाने की छूट है।”

“हमें जब भी कोई बात मनवानी होती है हम पापा से कहते हैं। पापा हाँ कह दें तो फिर मम्मी की नहीं चलती। पर फिर यह भी लगता है कि बड़े होकर हमारे साथ ऐसा हो तो बहुत बुरा लगेगा।”



यह चर्चा यहाँ खत्म हो गई क्योंकि अगली क्लास का समय हो चुका था। पर जाते-जाते इन सभी ने हमसे कहा कि हम फिर दोबारा इनसे मिलें और इस तरह के विषयों पर चर्चा करें। हमें लगा कि यह एक सिलसिले की शुरुआत थी। चर्चा में सरोजिनी नायडू गर्ल्स हायर सेकेंडरी स्कूल की छात्राओं ने भाग लिया। इनके नाम हैं - नीतू सिंह, सविता बिल्लोरे, आरती पाटीदार, नीतू कोरी, माया गायकवाड़, रश्मि सिंग, ज्योति, गरिमा, मेधा खिरवरडकर, अभिलाषा पस्तोर, सुरभि सक्सेना, नारायणी बिष्ट, निर्मला मंगनानी, सपना कुशवाहा, पिकी देवानी, शारदा साठे, तृप्ति मेहरा, रजनी शर्मा, रीना, निशा, भव्या भार्गव, लक्ष्मी पवार, और अंजना सोनी।



चित्र : काली फॉर विमेन को पहली किताब 'शरीर की जानकारी' से साभार।

महिला दिवस पर  
कोरिया की एक कविता

## माँ और बच्चा

माँ गई है सीपी लेने  
टापू पर के उस किनारे  
और रह गया घर अकेला  
देख-भाल करने को बच्चा

तब तक जब तक सो ना जात  
सिर लगा कुहनी-तकिए पर  
सागर की लोरी सुन-सुनकर

बच्चा चाहे गहरा सोया  
बेथैनी छा जाती माँ पर  
रोते वहाँ समन्दर-पंछी  
लगातार जब धीख-धीखकर

जल्दी-जल्दी बेधारी माँ  
रेत-राह पर कदम बढ़ाती  
सिर पर रख आधा मटका ही  
घर पर वह दौड़ी आ जाती

□ हन इन ह्योन

अनुवाद : दिविक रमेश

चित्र : इण्डिया-वन इन्स्टीट्यूट

एण्ड वन माइट्स से साभार

# हमारा बाल - मेला

उज्जैन नगर में कार्तिक मेला और शाला में 14 नवम्बर बाल - दिवस, फिर बाल मेला लगाने का मन बच्चों का क्यूँ न हो। शाला में कुछ न कुछ नया-नया होता रहे फिर दौड़कर स्कूल जाने को जी चाहता है। मराठी प्राथमिक विद्यालय देवासद्वार के बच्चों ने अबकी कुछ अलग तरह से बाल - मेला आयोजित करने की ठानी। मेले का प्रारंभ 14 नवम्बर को हुआ। सुबह से ही बच्चे अपने विभिन्न परिधानों में एकत्रित थे। एक बच्चे को अचकन पहनाकर, लाल गुलाब का फूल लगाकर चाचा - नेहरू बना दिया गया। चाचाजी ने सब बच्चों के बीच खड़े होकर अपने बारे में बताया। एक छात्र बना गुब्बारे वाला। उसके गुब्बारे चाचाजी ने खरीदकर बच्चों में बाँट दिए सारे बच्चे खुश।

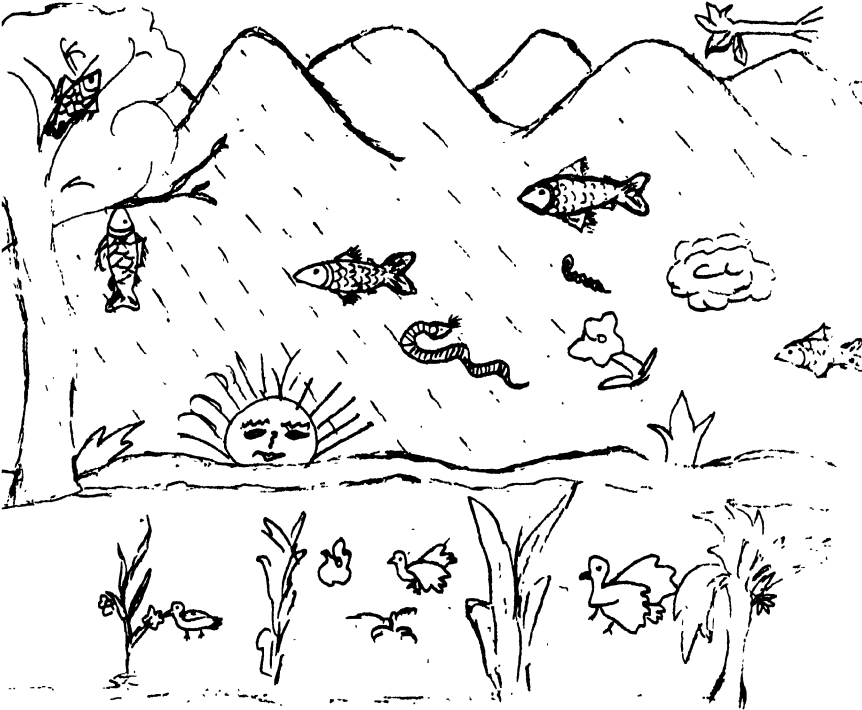
चुनाव के पोस्टर, नारे और सारा चुनावी माहौल। नगर में विधानसभा के चुनाव हों और हम न जानें कि चुनाव क्यूँ होता है? कैसे होता है? बच्चों ने कक्षा 4 एवं कक्षा 5 के दो-दो उम्मीदवार शाला-प्रतिनिधि के लिए खड़े किए। उनके चुनाव चिन्ह थे सूरज, तारा, बल्ला और गेंद। बच्चों ने एक मतदान पेटी बनाई और अगले दिन चुनाव प्रक्रिया हुई। श्यामपट पर उम्मीदवार बच्चों के नाम और चुनाव-चिन्ह बने थे। किसी एक का नाम लिखकर उसका चुनाव-चिन्ह बनाकर मत-पेटी में डालना था। इस चुनाव में मोहल्ले के कुछ व्यक्ति भी थे, उन्होंने चुनाव के बाद पंचायत - नगरपालिका आदि के कर्तव्यों के बारे में बच्चों को समझाया। इस चुनाव को देखने अन्य

शालाओं के बच्चे और अध्यापिकाएँ भी एकत्रित थे। मत-गणना के बाद शाला प्रतिनिधि के क्या कर्तव्य होंगे ये भी बच्चों को बताया गया।

हमने सोचा कि बच्चे ये भी तो जानें कि अखबार कैसे छपता है? उनकी पुस्तक कैसे छपती है? बस शाला प्रतिनिधि के साथ जाकर शाला के समीप ही "अग्निपथ" समाचार पत्र के सम्पादक महोदय से बात की। और वे तैयार हो गए बच्चों को प्रेस दिखाने के लिए। अगले दिन दोपहर में बच्चे अपनी दीदी के साथ पहुँच गए प्रेस में। आप समाचार कहाँ से लाते हैं? उसको तैयार कैसे करते हैं? फोटो किस तरह छापते हैं? कागज कहाँ से आता है? और क्या हम भी लिख सकते हैं? आदि प्रश्न पूछकर वहाँ के कर्मचारियों से जान-पहचान कर ली।

उसी दिन यहाँ उज्जैन में "पहियों पर रेल प्रदर्शनी" वाली रेल आई हुई थी। प्रेस देखने के बाद बच्चे सीधे रेलवे स्टेशन पहुँचे। रेल के डिब्बों में ही रेल की जानकारी से बच्चे बहुत आनंदित हुए।

'डर' का जो 'र' है वह इन सबमें भी है इंसपेक्टर, टीचर और डॉक्टर। और बच्चे इनसे डरते भी हैं। हमने सोचा कि क्यूँ न बच्चों की इनसे प्रत्यक्ष भेंट हो, बातचीत हो। बस मेले की अगली गतिविधि हुई "इनसे मिलिए" की। बच्चों से मिलने आए सब इंसपेक्टर श्री सतीश आर्य, डॉक्टर श्री दिनेश खरे और प्रधान अध्यापक श्री जयवंत चावरेकर ( प्रा. वि. दौलतगंज)। बच्चों ने बिलकुल



अनौपचारिक बातचीत सबसे की। आपको इंस्पेक्टर, डॉक्टर, टीचर बनने के लिए कितना पढ़ना पड़ा? क्या आप भी खूब मस्ती करते थे? ऐसे प्रश्न पूछकर उनसे अपने प्रश्नों के समाधान भी पाए।

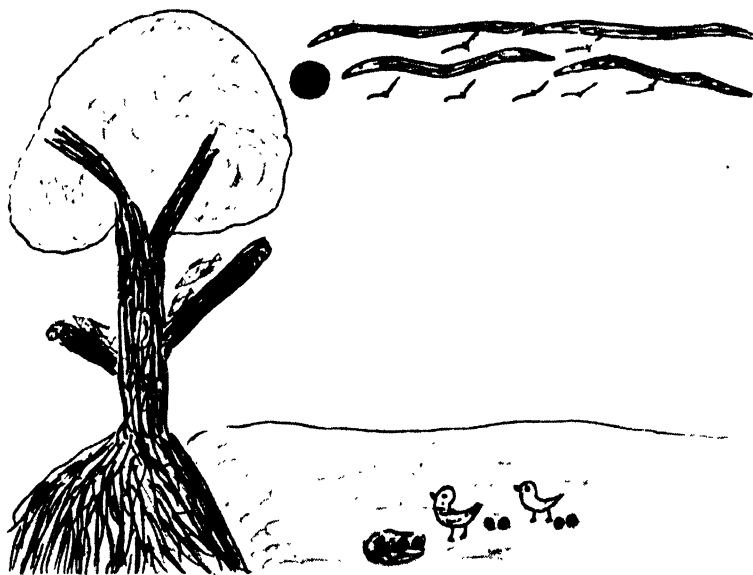
अभी मेले का समापन शेष था। अगले दिन बच्चे अपने अपने टिफिन लेकर शाला में एकत्रित हुए। जन - सहयोग से एक बस तैयार थी उसमें बैठकर पहुँच गए कालिदास उद्यान। वहाँ पहले गीत गाए उसके बाद झूला, फिर फिसलपट्टी भी थी खेलने के लिए। चित्रकला भी की और अभिनय भी किया।

4 - 5 दिन तक टुकड़ों में चले इस बाल मेले में बच्चों को एक अनूठे आनंद की प्राप्ति हुई। मेला भी हुआ और बहुत कुछ सीखा भी। बच्चों के मन में तो अभी भी ये कुलबुलाहट है कि "अगला बाल मेला कब होगा?"

**रपट : श्रीमती अनुपमा रोकड़े,  
मराठी प्रा.वि. देवासद्वार,  
उज्जैन**

## भोपाल में बाल मेला

भोपाल के बी. एच. ई. एल. सोसायटी के अपने क्षेत्र के आठ स्कूल हैं। वहाँ के राधाकृष्णन कन्या उ. मा. स्कूल में 16. 1.99 को कक्षा छठी से आठवीं तक के बच्चों के साथ बाल मेला करना तय हुआ।



● अर्पणा विस्वास, सातवीं, राधाकृष्णन स्कूल, भोपाल, म.प्र.

एक दिन पहले वहाँ के शिक्षकों से चर्चा की गई कि बाल मेले में क्या-क्या गतिविधियाँ होंगी, समय, बच्चों को क्या तैयारी करनी है आदि। शिक्षकों ने कुछ गतिविधियाँ पहले सीखीं।

दूसरे दिन बालमेला शुरू हुआ। हर कक्षा के साथ उनकी कक्षा अध्यापिका और साथ में एकलव्य का एक सदस्य था। ओरीगेमी से वैसे तो बच्चे परीचित थे पर नई चीजें सीखने में उन्हें बहुत मजा आया। घुमक्कड़ बनाते समय शुरू में उसे चिपकाने में थोड़ी दिक्कत हुई पर जब बन गया तो उनका उत्साह बढ़ा। बच्चों ने कहानी लिखी और चित्र बनाए। एक-

एक लाइन जोड़कर कहानी आगे बढ़ाने में बच्चों को बहुत मजा आ रहा था। नक्शे के खेल खेले। एक टोली ने भारत के नक्शे में से किसी एक जगह के बारे में बीस-बीस प्रश्न बनाए और दूसरी टोली से पूछे। शुरू में प्रश्न बनाना कठिन लगा पर धीरे-धीरे उनको समझ में आने लगा।

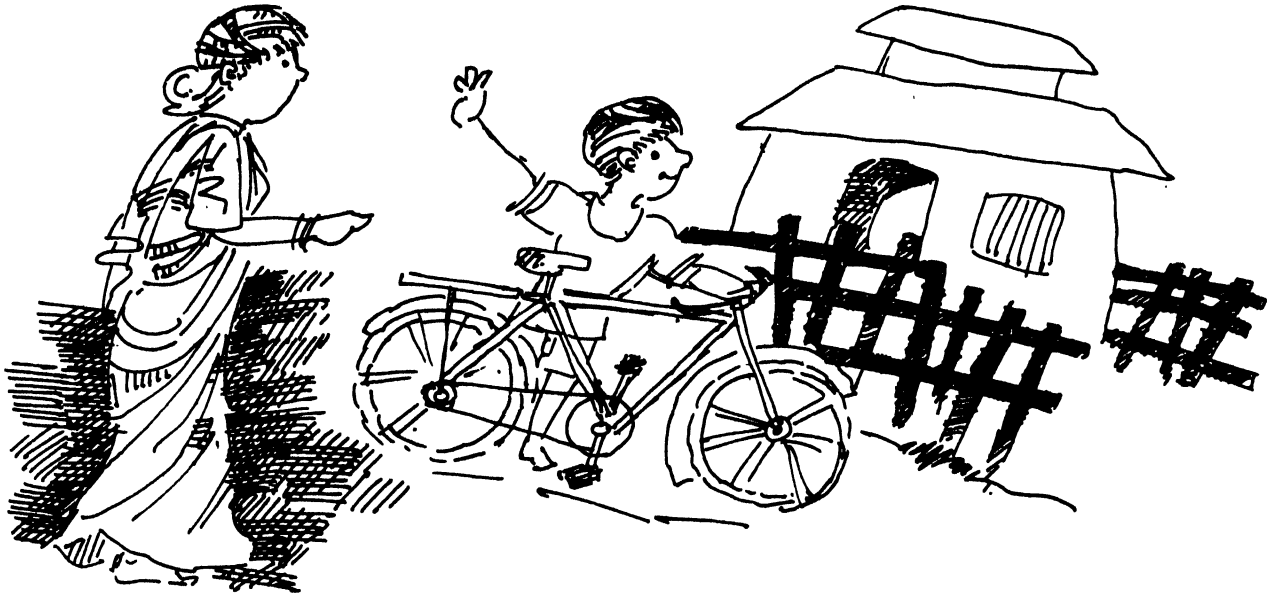
बाल मेले में बच्चों के लिए कविताएँ लिखने वाले श्री प्रसाद जी भी कुछ समय बच्चों के साथ रहे। उन्होंने अपनी कविताएँ भी बच्चों को सुनाई। उनकी कविता 'हम बैठे हाथी पर हल्लम हल्लम' सुनकर बच्चों को बहुत मजा आया।

**रपट : वीना भाटिया व छाया दुबे**

## पुस्तकें आमंत्रित हैं

दिल्ली के डॉ. रत्नलाल शर्मा स्मृति न्यास ने सूचना दी है कि पाँचवें श्रीमती रत्न शर्मा स्मृति बाल साहित्य पुरस्कार - 1999 के लिए विचार हेतु पुस्तकें आमंत्रित हैं। पुरस्कार में 15000 रुपये, प्रतीक सिन्ध तथा प्रशस्ति पत्र दिया जाता है। इसके लिए जनवरी, 94 से दिसम्बर, 98 के बीच पहली बार प्रकाशित किताबों पर ही विचार किया जाएगा। विचार के लिए पुस्तक की चार प्रतियाँ 30 अप्रैल, 1999 तक महासचिव, डॉ. रत्नलाल शर्मा स्मृति न्यास, ए-27, रोड अपार्टमेंट सेक्टर - 14, रोहणी, दिल्ली - 05 के पते पर भेजी जा सकती हैं।

## होशियार



"सड़क पर गाड़ियों से होशियार रहना! नाले में गिर मत जाना!"

"ओह, माँ मैं तो सिर्फ दुकान तक जा रहा हूँ तुम्हारे लिए डबलरोटी खरीदने। तुम तो ऐसे कह रही हो कि पड़ोसी समझेंगे मैं लंदन जा रहा हूँ। तुम तो जानती हो, हमारे मोहल्ले की सड़कों पर बहुत कम गाड़ियाँ चलती हैं, और नाले इतने बड़े नहीं हैं कि मैं उसमें गिर जाऊँ!"

शेन की माँ ने ठंडी साँस ली और हाथ हिला कर उसको विदा किया। जब वह साइकिल पर फाटक से बाहर निकला तो उसने फिर पुकारा, "मोटरोँ से संभल कर! होशियार रहना!"

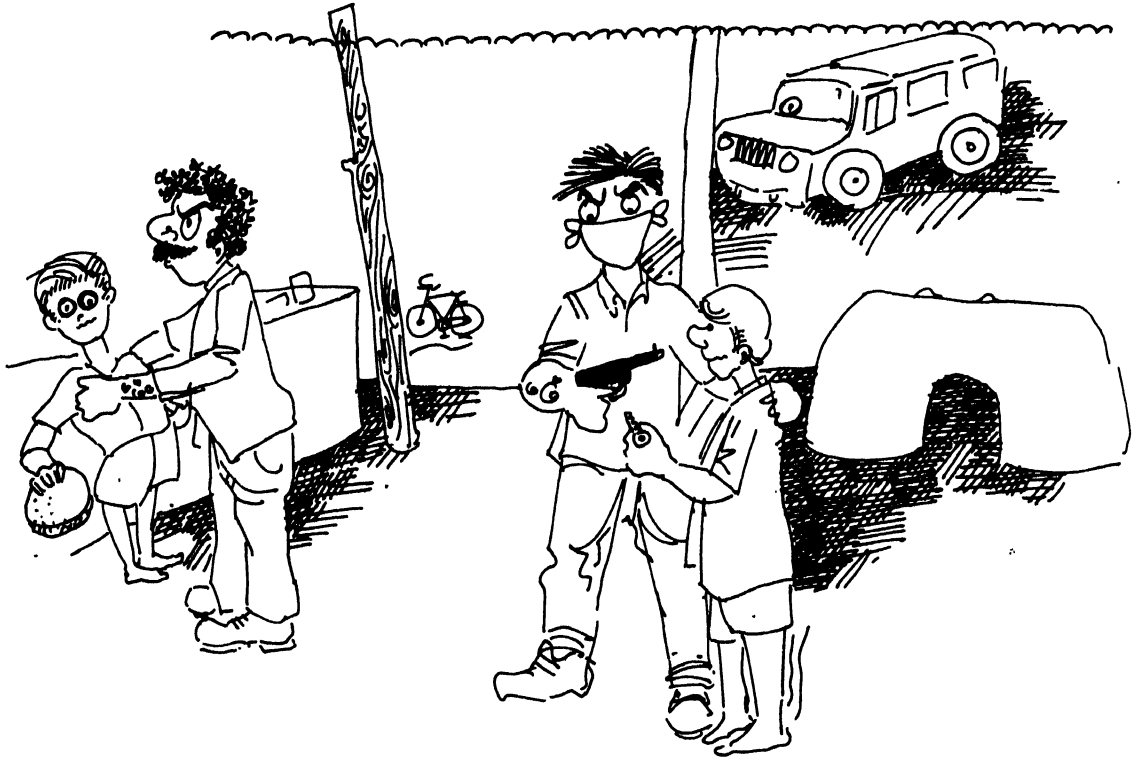
सिर हिलाकर शेन घरों की कतारों के सामने से निकला, बाईं तरफ पीछेवाली गली में मुड़ा, और फिर दाएँ हाथ को, मोहल्ले के तंदूर वाले की तरफ। उसने पहले तंदूर वाले लड़के से बहस की कि रोटी तो दिन पर दिन छोटी होती जा रही है, जबकि वह दाम दस सेंट ज्यादा माँग रहा है। उसके बाद उसने एक डबलरोटी खरीदी।

शेन दुकान से बाहर निकला तो बहुत नाराज़ था। वह इतना नाराज़ था कि उसने यह भी नहीं देखा कि एक वैन आकर रोटीवाली दुकान के सामने रुकी। दो आदमी उसमें से उतरे और उन्होंने उसको धक्का देकर वापस दुकान के अंदर कर दिया। एक ने पिस्तौल दिखाई।

उसने गुराकर कहा, "अगर अपने सिर के आर-पार छेद नहीं चाहते तो मुँह बंद रखो।"

दूसरा आदमी दौड़कर दुकान के अंदर गया और तंदूरवाले लड़के की ठोड़ी के नीचे पिस्तौल रख दी। डर से लड़के का चेहरा उस रोटी के टुकड़े की तरह सफ़ेद हो गया जिसे वह काट रहा था। उसके घुटने काँपने लगे, उसके दाँत किटकिटाने लगे।

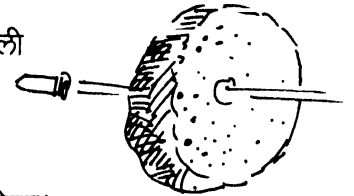
"तिजौरी की चाबी दो, वर्ना इस कान से उस कान तक तुम्हारा गला चीर कर रख दूँगा।"



तंदूरवाला लड़का चाबी निकालने की कोशिश कर रहा था तो दूसरे आदमी ने शेर को धक्का देकर दुकान के काउंटर के साथ लगा कर खड़ा कर दिया। लड़के का हाथ इतना काँप रहा था कि चाबी उसके हाथ से छूट कर शेर के पैरों के पास गिर गई।

इतने में तंदूरवाला चिल्लाया, "ये! यह क्या हो रहा है! कौन हो तुम लोग?" वह अभी-अभी पीछे वाले कमरे से दुकान में आया था।

धौंय! बंदूक चली! उस आदमी ने बंदूक के घोड़े को दबा दिया था! गोली शेर के पाँव के पास गिरी।



शेर और तंदूरवाला लड़का डर से उछल पड़े।

तंदूरवाला पीछे वाले कमरे में भाग गया और ज़ोर से दरवाजा बंद कर लिया।

बंदूकवाला और उसका साथी दुकान के बाहर भागे, वैन में कूदे, शेर की साइकिल को टक्कर मारकर उसे गिराया, और बिजली की तेज़ी से हवा हो गए।

शेर मुँह फाड़े देखता रहा। उसने देखा कि वैन सड़क पर भागी जा रही है और मोड़ पर जाकर आँखों से ओझल हो गई। शेर ने झुककर अपनी डबलरोटी उठाई, मुड़ा और दुकान से बाहर हो गया। अब वह एक मिनट भी और ज़्यादा वहाँ रुकने को तैयार नहीं था। ऐसा उसके साथ पहले कभी नहीं हुआ था। उसकी माँ ने गाड़ियों से और नाली से बचने को सावधान किया था उसने कहा था। साइकिल से गिर मत पड़ना। लेकिन यह तो कुछ और ही था!

वह अपनी साइकिल तक दौड़ा और जब उसका पिचका टायर देखा तो गुस्से से चीख पड़ा। वैन उसके ऊपर से निकल गई थी। अब वह अपनी माँ को क्या बताएगा? उसको साइकिल उठाकर ले आते देखेगी तो उसकी जान निकल जाएगी।

पाँच सेकेंड तो उसकी माँ के मुँह से आवाज़ ही नहीं निकली। तब वह घबराई आवाज़ में बोली, "आह शन! तुम किसी गाड़ी से टकरा गए! तुम साइकिल से गिर पड़े! तुम नाली में गिर पड़े। तुम...!"

"माँ... चुप भी रहो, माँ... मुझको समझाने दो!... नहीं... नहीं... कुछ मत बोलो। मैं बहुत सावधान था। मोटरों से संभलकर गया, अपना बहुत बचाव किया.... लेकिन आखिर मैं तंदूरवाली दुकान में फँस गया।"

उसकी माँ रोने लगी, "हाय मेरा बेटा, मेरा बेचारा शन, हाय...!"

गंभीर चेहरे से शन ने रोटी वाला हाथ बढ़ाया।

माँ ने रोटी ले ली। उसकी एक उंगली रोटी में बने एक छेद में घुस गई। "अरे यह क्या है?" उसने चौंककर पूछा और रोटी की ओर घूरकर देखा। बंदूक की गोली से बना छेद। जब बंदूक गलती से छूट गई तो गोली रोटी में लग गई थी।

"यह बंदूक की गोली का छेद है। बंदूक वाला आदमी...!" लेकिन इसके पहले कि शन अपनी बात खत्म करता, उसकी माँ बेहोश हो गई।

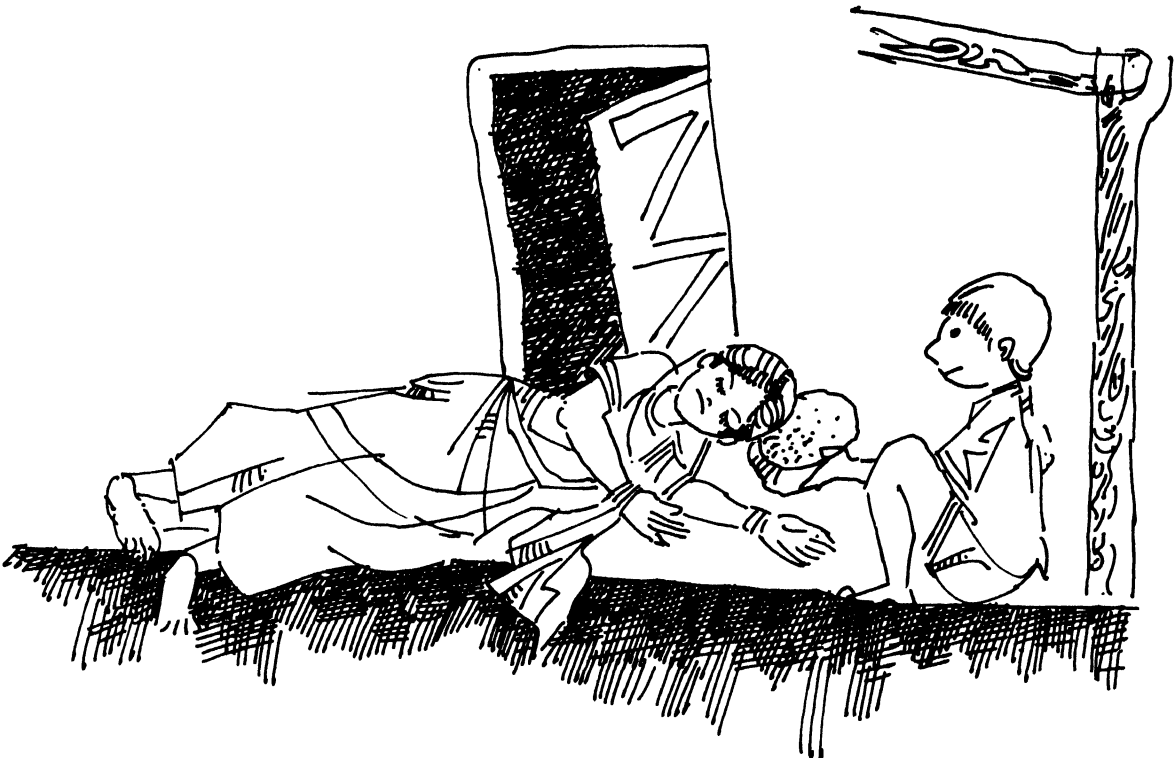
"माँ... माँ... तुमने मेरी पूरी बात नहीं सुनी।" वह एकदम रुक गया और अपनी बेहोश माँ को आँखें फाड़े देखता रहा।

"ओह, भगवान! अब मैं क्या करूँ?" शन घबराया।

शन ने माँ के हाथों से डबलरोटी निकाल कर उसके सिर के नीचे तकिए की तरह रख दी। फिर अपनी नानी को बुलाने दौड़ा। उनको मालूम होगा कि इस हालत में क्या करना चाहिए।

शन फाटक की तरफ भागा। इतने में कुछ पड़ोसिनें आ गईं।

"क्या हुआ, शन?"



"तुम्हारी माँ को क्या हुआ?" एक औरत ने माँ को घर से बाहर बरसाती में पड़े देखा तो घबरा कर पूछा।

"ओह... बीबी सलीमा... कृपा करके माँ के पास थोड़ी देर रहिए। मैं अपनी नानी को बुलाने जा रहा हूँ। अपनी मौसियों को भी बुला लाऊँगा।"

"हाँ, हाँ, ठीक है, बेटे। लेकिन हुआ क्या?"

"बंदूक की गोली लग गई है। छेद हो गया है। बंदूक छूट गई। बंदूकवाला आदमी भाग गया। उसकी गाड़ी मेरी साइकिल के ऊपर से निकल गई। कृपा करके माँ के पास रहिए। मैं जाता हूँ अपनी मौसियों को बुलाने।"

दोनों पड़ोसिन एक दूसरे की ओर देखती रह गईं। दूसरे पड़ोसी भी आ गए।

एक पड़ोसिन ने बढ़ती भीड़ को देखा और डरी हुई आवाज में बोल पड़ी, "उसकी माँ के सिर में गोली लगी है, छेद हो गया है।"

औरतें चौंक पड़ीं!

मैडम सलीमा ने रोती-सी आवाज में कहा, "बंदूक लिए एक आदमी आया, उसने गोली चला दी।"

"उसने शेन की साइकिल ही कुचल दी।" दूसरी पड़ोसिन ने रोते हुए कहा।

पड़ोसिन बाला ने चिंता भरे स्वर में पूछा, "अब हमें क्या करना चाहिए?"

"पुलिस को बुलाओ। एम्बुलेंस के लिए फोन करो। शेन के पिता को फोन करो।" कई आवाजें आईं, "क्या हुआ..."

"मैं कहाँ हूँ?...?" शेन की माँ बोल पड़ी।

पहले तो पड़ोसी चौंक पड़े। फिर शेन की माँ के ऊपर झुक गए।

"हिलना मत! बिल्कुल नहीं। तुम्हारे सिर में गोली लगी है-- छेद हो गया है।" किसी ने कहा।

"श्रीमती लिन पुलिस को फोन करने गई हैं।"

"एम्बुलेंस आ रही है।"

"संभलकर! बिल्कुल बिना हिले-डुले लेटी रहो।" पड़ोसियों ने सलाह दी।

"पुलिस की कोई ज़रूरत नहीं है। एम्बुलेंस नहीं चाहिए मुझको! गोली मेरे सिर में नहीं लगी, डबलरोटी में लगी है। छेद डबलरोटी में है।" शेन की माँ ने जोर से कहा।

उसने उन हाथों को झटक दिया जो उसको थामे हुए थे और खड़ी हो गई। श्रीमती चैन, बीबी सलीमा, बाला, श्रीमती लिन और सारे पड़ोसी भौचक्के रह गए। एक ने रोटी उठाकर देखी। सचमुच, उसके ठीक बीच में गोली का छेद था--आरपार। सचमुच की गोली।

"लेकिन डबलरोटी को किसने गोली मारी?"

"डबलरोटी को क्यों गोली मारी?"

इतने में शेन आ पहुँचा! "ओह माँ... ठीक हो तुम? नानी तो घर में है नहीं! सारा घर बंद पड़ा है।"

"हुआ क्या था, शेन? क्या था," उसकी माँ ने पूछा।

"तुम बैठ जाओ, माँ। बैठ जाओ, मैं बताता हूँ।" शेन ने सारा किरसा सुनाया। उसकी माँ और दूसरी स्त्रियों ने कई बार आश्चर्य और डर से साँस अन्दर खींची। लोग लगातार सवाल पूछते जा रहे थे। शेन जवाब दे रहा था। ऊँची आवाजें हवा में गूँज रही थीं। आखिरकार पुलिस आ गई। एम्बुलेंस भी आ गई।

शेन ने सारा किस्सा फिर से सुनाया। उसने एम्बुलेंस वालों को रोटी में हुआ छेद भी दिखाया। सिर हिलाकर वे चले गए। लोगों के दल यहाँ-वहाँ डबलरोटी को लगी गोली की चर्चा कर रहे थे। फिर सब लोग पुलिसवालों के पीछे-पीछे तंदूरवाले की दुकान पर गए जहाँ उन्होंने जॉच-पड़ताल शुरू की।

तंदूरवाले लड़के ने अपनी कहानी सुनाई, तंदूरवाले ने अपना और शेन का किस्सा फिर से सुनाया। अब तक उसका डर दूर हो चुका था और उसको लग रहा था कि छापामारों के साथ उसकी मुठभेड़ उसकी छोटी-सी जिंदगी की सबसे रोमांचक घटना थी। सबसे दिलचस्प घटना।

डबलरोटी अपने साथ लेकर पुलिस चली गई तो वहाँ इकट्ठी हुई भीड़ ने तीन बार और उसकी कहानी सुनी। जब उनका सारा कौतूहल शांत हो गया तो एक-एक करके सब चले गए।

शेन ने ठंडी साँस भरी, एक दूसरी डबलरोटी ली और अपनी माँ के साथ घर चला।

अंधेरा हो चला था। अब पिताजी भी घर आते होंगे। हाँ, अब वह उनको अपनी कहानी सुनाएगा। फिर नानी को, मौसियों को। वह भी तो सुनना चाहेंगी। "तुम अब ठीक हो न, माँ?" शेन ने पूछा। माँ ने सिर हिला दिया। उसने उसके कंधों को अपने हाथ से घेर लिया! "ईश्वर का धन्यवाद कि तुम सकुशल हो।"

शेन ने मुस्कराकर माँ का गाल चूमा। वह हमेशा उसका कृतज्ञ रहेगा। अगर वह यह न कहती, "होशियार रहना" तो यह मजेदार रोमांचक घटना न घटती!

□ जेसी वी

सभी चित्र : धनंजय

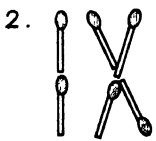
(कहानी नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के सौजन्य से 'आओ, हैंसें एक साथ' से साभार)



### माथापच्ची : हल, फरवरी, 99 अंक के

1. हरिया के पास 49 एकड़ व लखीराम के पास 35

एकड़ जमीन है।



3. 4 बजकर 30 मिनट।



6. चिन्ना ने पैंट उलटी पहनी थी।

7. 1 से 9 तक के अंक और उनके प्रतिबिम्ब आमने-सामने सटे हुए हैं। खाली जगह पर 6 और उसका प्रतिबिम्ब आरेंगे।

वर्ग

पहेली

90

का

हल

सौ		पं	च	म		च	को	र
गं	ध	क		क	म		छ	
ध		ज		स		च	क	ला
	न		सा	द	र			चा
क	म	जो	र		म	झ	धा	र
ले			स	घ	न		क	
वा	बा	ल		मा		त		प
	द		सी	सा		क	स	र
प	र	म		न	क	ली		सौं

वर्ग पहेली 90 के सही हल भेजने वाले पाठक हैं— रविकांत मित्तल, ब्यावरा (राजगढ़); नेहा सिंगारे, सारणी व रीता सोनारे, भैंसदेही, बैतूल; भरतलाल यादव, कोरबा; योगिता व ममता अमोल्या, खण्डवा; राजुल मालपानी, पिपरिया व चन्द्रकान्त

मान्धाता, सोहागपुर, होशंगाबाद; योगेश कुमार टेलर, राजपुर, बड़वानी; पारुल बत्रा, टीकमगढ़; पुरुषोत्तम वाघेला, रायपुर; अनुपम कुमार सोनी, निगवानी, शाहडोल; मधुमिता यादव, मरवाही, बिलासपुर; मयंक कुलश्रेष्ठ, बालगढ़, ग्वालियर; राजुषा उपाध्याय, टिमरनी, हरदा; मोनिका गौतम, बैहर, बालाघाट। सभी म.प्र.। समीर रस्तोगी, राजामुन्दरी, आंध्र प्रदेश। डूंगरसिंह, किशनसिंह व महेन्द्रसिंह परिहार, भाड़खा, बाड़मेर; गुमान सिंह, छीपरी, धौलपुर; राजस्थान। मालविका पुराणिक, जामनगर, गुजरात। अनिमेष उपाध्याय, काशीपुर, नैनीताल, उ.प्र.। समीक्षा धामारीकर, राउरकेला, उड़ीसा। इन्हें चकमक का मार्च, 99 अंक उपहार में भेजा जा रहा है।

चकमक

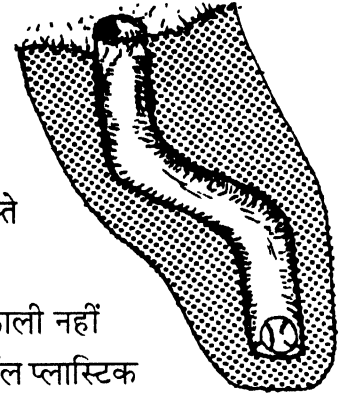
मार्च, 1999



# माथापट्टी

(1)

मोहल्ले में क्रिकेट का मैच चल रहा था। रामदीन काका के घर के पिछवाड़े की खुली ज़मीन में मोहल्ले के सारे बच्चे जमा थे। पहली टीम ने काफी अच्छा प्रदर्शन किया था। और अब बच्चे अपने-अपने घरों से खाना खाकर दूसरी टीम की बैटिंग के लिए जमा थे। पर यह क्या? पहले ओवर की दूसरी ही बॉल किसी चूहे के बिल में घुस गई। बिल भी ऐसा था कि उसके रास्ते में थोड़ी दूर सीधे जाने के बाद एक मोड़ था।



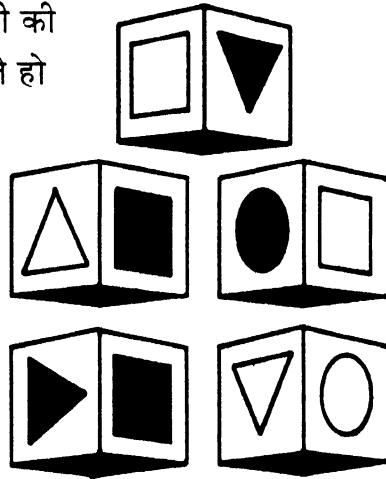
लाख कोशिश करने पर भी हाथ, डण्डा, किसी भी चीज़ से बॉल निकाली नहीं जा सकी। तब मोहल्ले की लाल बुझक्कड़ गुड्डन ने आकर कहा, “अगर बॉल प्लास्टिक की या रबर की हो तो मैं एक तरकीब बता सकती हूँ, जिससे ज़मीन खोदनी भी नहीं पड़ेगी और बॉल 5 मिनट में बाहर आ जाएगी।”

क्या तरकीब बताई होगी उसने?

(3)

(2)

यहाँ एक गुटके को पाँच अलग-अलग स्थितियों में रखकर उसके चित्र बनाए गए हैं। क्या इन पाँचों से मिल रही जानकारी की मदद से तुम यह बता सकते हो कि गुटकों की इन पाँचों स्थितियों में इनके ऊपर वाली सतह पर क्या बना हुआ है?



या कुछ और?

34

रज़िया के यहाँ खूब सारी मुर्गियाँ और बकरियाँ हैं। वो उन्हीं का तो धंधा करते हैं। एक दिन जब मैंने रज़िया से पूछा कि कितनी मुर्गियाँ और कितनी बकरियाँ हैं उसके घर। तो उसने जवाब दिया, “सबके सिर और टाँगों का जोड़ 66 है। और मैं यह भी बता दूँ आपको कि जितनी बकरियाँ हैं उससे दुगुनी मुर्गियाँ हैं। अब आप खुद ही हिसाब लगा लीजिए कि कितनी बकरियाँ हैं और कितनी मुर्गियाँ?”

मैं तो हिसाब जोड़ने की कोशिश में थक गई। क्या तुम मेरी मदद करोगे?

(4)

एक आदमी जलाऊ लकड़ियाँ काट रहा था। वह हर सेकण्ड में एक बार कुल्हाड़ी से लकड़ी पर वार करता था।

एक आदमी उससे लगभग 300 मीटर की दूरी पर खड़ा होकर कुल्हाड़ी की आवाज़ सुन रहा था। अब अगर आवाज़ की गति 332 मीटर प्रति सेकण्ड है तो दूर खड़े आदमी को सुनाई देने वाले कुल्हाड़ी के हर वार के बीच कितना समय बीत जाता होगा?

(5)



यह साँप कुछ अजीब-सा दिख रहा है बता सकते हो इसमें क्या गड़बड़ है?

(6)

इन दो चित्रों में कम से कम छह बदलाव या फर्क ढूँढकर बताओ।



(7)

लालू सब्जी खरीदने बाज़ार जा रहा था। उसके पास एक 10 रु. का नोट, एक 5 रु. का नोट और 12 सिक्के थे। उसने रास्ते में चलते-चलते हिसाब जोड़ा कि उसके पास कुल 20 रु. 25 पैसे थे। बताओ उसके पास कितने पैसे के कितने-कितने सिक्के रहे होंगे?

35

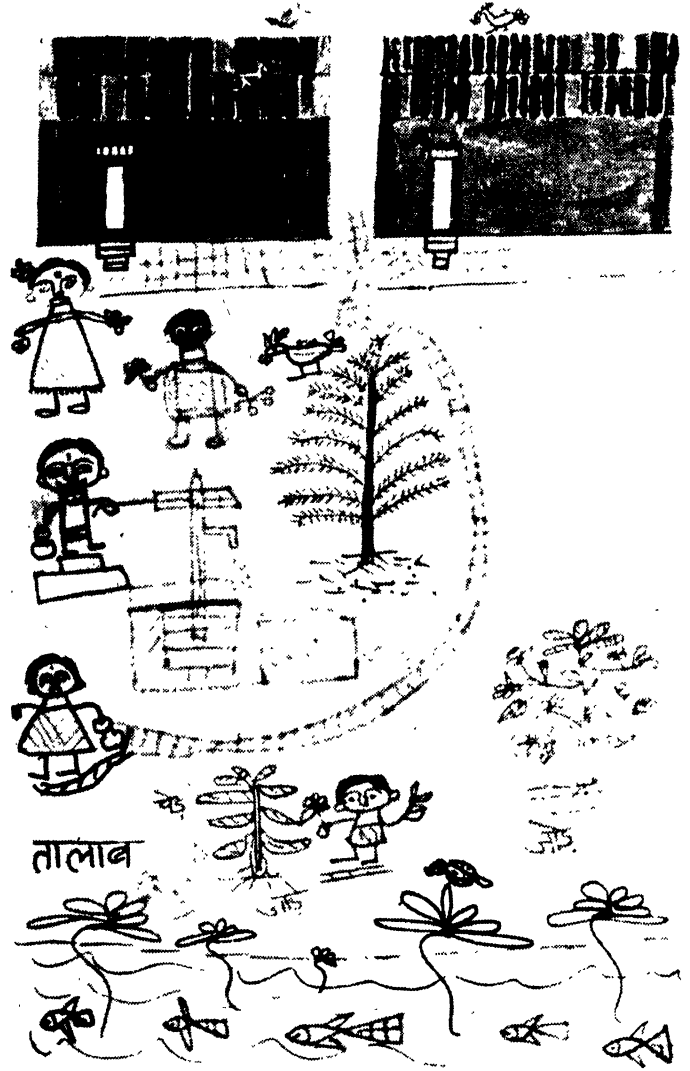


मेरा पना

## मेरे तोते की कहानी

एक दिन मेरा भाई जंगल में गया। उसे एक तोते का छोटा-सा बच्चा मिला। तो उसे मेरा भाई ले आया। फिर मेरे पिताजी ने कहा कि इसे कुछ खिला-पिला देना और उसे पिंजरे में बन्द कर देना। फिर मेरे भाई ने उसे पिंजरे में बन्द कर दिया। एक दिन मेरी छोटी बहन तोते को निकालने लगी। अचानक तोता उड़ गया और नीम पर बैठ गया। फिर मेरा भाई धीरे-धीरे पेड़ पर चढ़ गया। और तोते को पकड़ लिया। फिर उसे पिंजरे में बन्द कर दिया। और रहते-रहते एक दिन मैंने तोता को पानी पीने को पिंजरा खोला। फिर अचानक मेरे हाथ से तोता उड़ गया। और जाकर मेरे पड़ोसी के नीबू पर बैठ गया। पड़ोसी का लड़का नीबू के पेड़ पर चढ़ गया। और तोते को पकड़ लिया। फिर होते-होते एक दिन मेरे छोटे भाई ने बड़े भाई से कहा, "भैया तोते को धागे से बाँध दो।" फिर एक दिन अचानक धागा टूट गया, तोता उड़ गया।

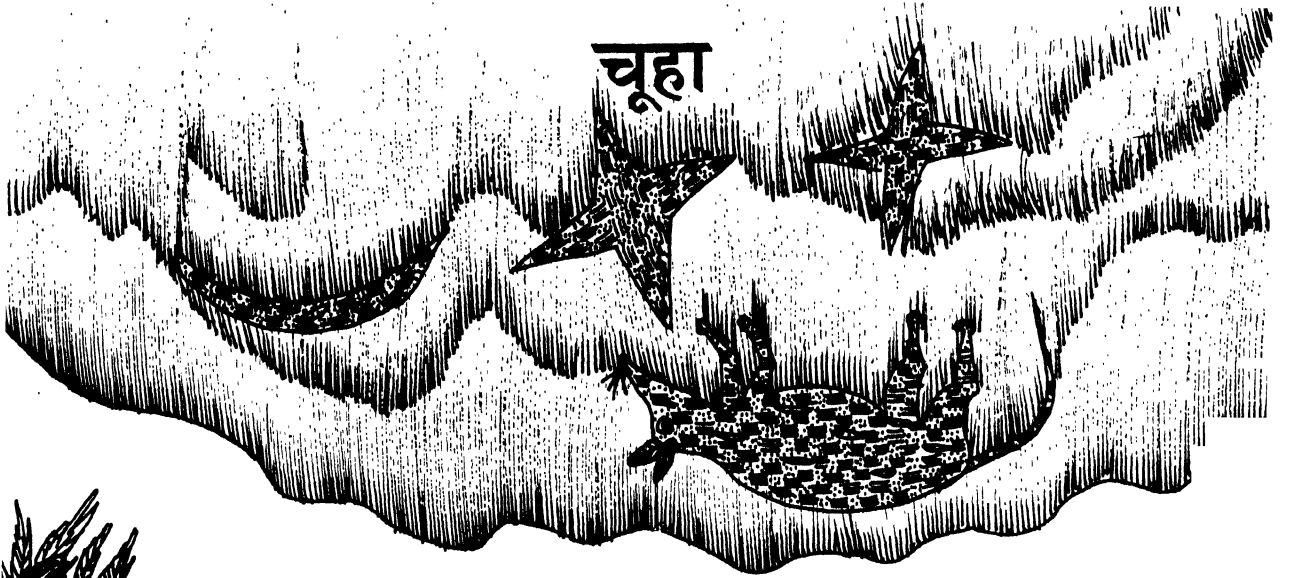
चित्र और रचना ● पूना आदिवासी, आठवीं,  
मड़देवरा, छतरपुर, म. प्र.



### पेड़

एक बार मैं मेरी सहेलियों के साथ घूमने गई, वहाँ पर बहुत से पेड़ थे। वहाँ एक नदी थी। उस नदी के पास एक नारियल का पेड़ था। उस पेड़ पर बहुत से नारियल लग रहे थे। मैं और मेरी सहेलियाँ उस पेड़ के नीचे सो गईं। अचानक धम से आवाज़ आई। मुझे लगा कि मेरी सहेलियाँ रस्सी कूद रही हैं, लेकिन नींद खुलने पर देखा कि मेरे सिर के पास नारियल पड़ा है। मैंने अपनी सहेलियों को जगाया। उन्होंने उस नारियल को उठा लिया और फोड़ के लाई। फिर हमने उस नारियल को खाया। शाम को हम वापस घर लौट आए।

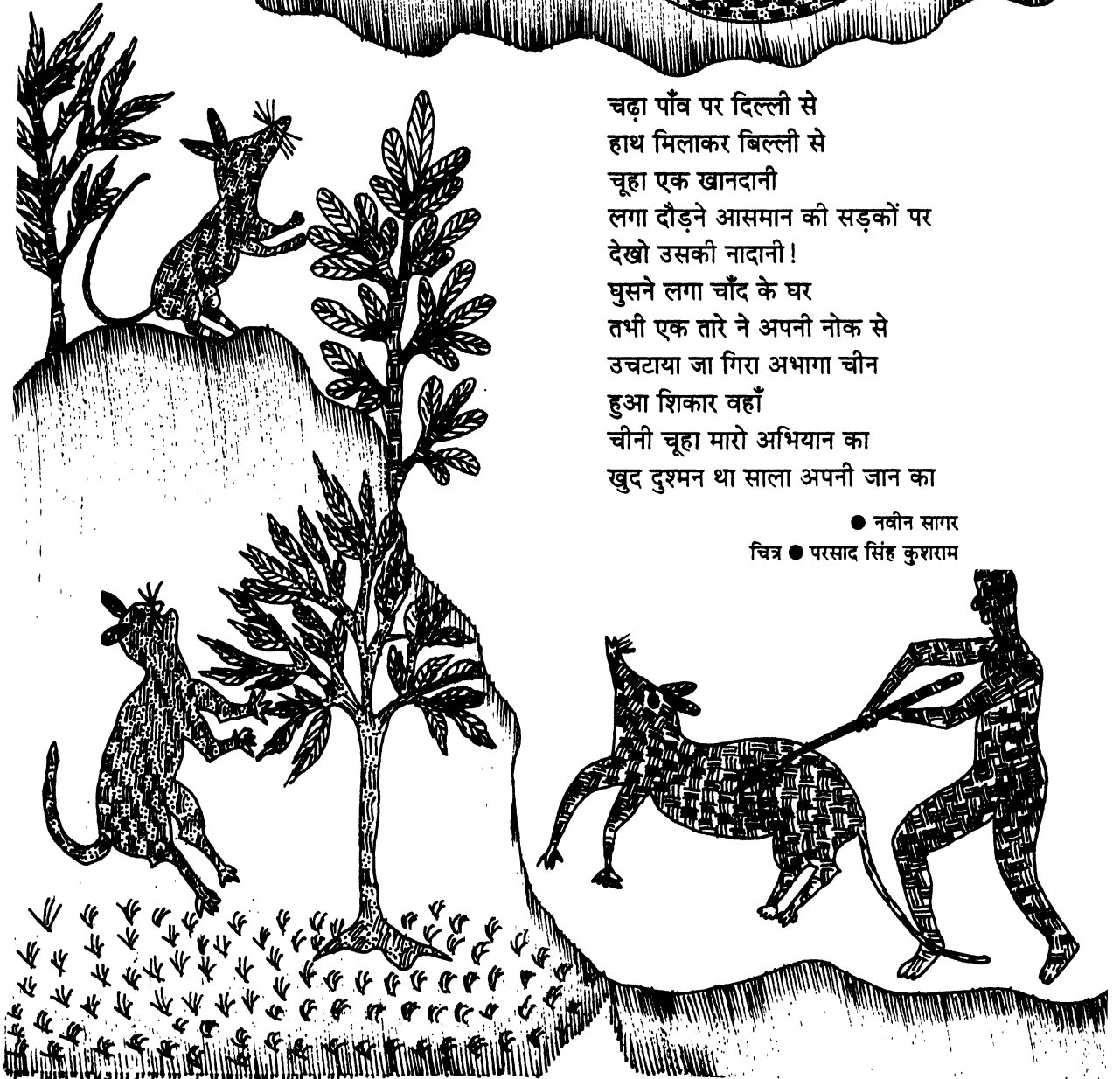
# चूहा



चढ़ा पाँव पर दिल्ली से  
हाथ मिलाकर बिल्ली से  
चूहा एक खानदानी  
लगा दौड़ने आसमान की सड़कों पर  
देखो उसकी नादानी !  
घुसने लगा चाँद के घर  
तभी एक तारे ने अपनी नोक से  
उचटाय़ा जा गिरा अभागा चीन  
हुआ शिकार वहाँ  
चीनी चूहा मारो अभियान का  
खुद दुश्मन था साला अपनी जान का

● नवीन सागर

चित्र ● परसाद सिंह कुशराम




चकमक

मार्च, 1999


## वर्ग पहेली - 92

1		2		3		4	5	
6				7				
						8		9
	10		11		12			
13					14		15	
			16	17				
18	19					20		21
			22			23		
24				25				

### संकेत : बाएँ से दाएँ

2. तुम लय में गा रहे हो, चंदन (3)
4. काले रंग की एक चिड़िया (3)
6. झूठे कारण और बर्बाद करना (3)
7.  (2)
8. ताश तक में 100 का आँकड़ा (3)
11. सावन जाने में है जंगल की पैदाइश (3)
13. वह कीचड़ जिसमें धँसते जा सकते हैं (4)
14. नानी का पीपा, जल ग्रहण करना (2, 2)
16. यूनान देश का निवासी (3)
18. खलल करने में है किसी चीज की इच्छा (3)
22. तंदुरुस्त (2)
23. वह मलाल में आक्रमण (3)
24. बुखार कम है में ढूँढो देसी खजूर (3)
25. तरल चीजें - पानी, दूध, तेल आदि - नापने की इकाई (3)

### संकेत : ऊपर से नीचे

1. जो हर रात के बाद आती है (3)
2. रूठे हुए को खुश करना (3)
3. जिस बात पर कोई संदेह न हो (4)
5. दुनिया, विश्व (3)
9. बोलना (3)
10. क्षण (2)
11.  दो समकेंद्रीय वृत्तों से बनने वाली गोलाकार पट्टी, रिंग (3)
12. मेरा जूता है . . . . .। इस मशहूर गाने की पहली लाइन में आने वाले देश का नाम (3)
13. तर्क या युक्ति (3)
15. हल्दी का रंग (2)
17. जंगल में या जंगल से घिरी जगह (4)
19. . . . . , लोग इसके फकीर भी होते हैं (3)
20. नगर (3)
21. बाढ़ (3)

किरण कुमार साहू, ससहा, रायपुर, म. प्र. द्वारा भेजी पहेली पर आधारित

वर्ग पहेली - 92 का हल चकमक के मई, 99 अंक में छपेगा। हल भेजने के लिए वर्ग पहेली की जाली को चकमक से न काटें। बल्कि संकेतों के नम्बर डालकर शब्द लिखकर भेज दें। सर्वशुद्ध हल भेजने वालों को चकमक का अगस्त, 1998 अंक उपहार में भेजा जाएगा।



## रोटी बनाई

एक दिन मेरी मम्मी बाजार गई। मुझसे कहा रोटी बना लेना। मैं आकर सब्जी बनाऊँगी। मैंने रोटी के लिए आटा छाना। दस कटोरी आटा लिया और एक कटोरी नमक डाला और दो लोटा पानी डाला। आटा ज्यादा गीला हो गया। फिर मैंने थोड़ा आटा मिलाया। और रोटी बेली, तवा चूल्हे पर रखा। और मैं टी. वी. में चित्रहार पर गाने सुनने लगी।

जब गाना समाप्त हुआ तो मैंने रोटी तवे पर डाली। तवा बहुत गरम हो गया था, रोटी जलने लगी। फिर मैंने दूसरी रोटी डाली वह भी जल गई। मैंने डरकर चूल्हा बन्द कर दिया। और मैं सो गई। फिर मेरी मम्मी बाजार से आई। डिब्बे में

देखा दो रोटी जली हुई थी। फिर मम्मी ने बाकी बचे आटे की रोटी बनाई और सब्जी बनाकर मेरे मम्मी-पापा और मैं खाना खाने बैठे। रोटी में नमक ज्यादा हो गया था इसके लिए पापा ने नाराज होकर मम्मी को डाँटा। मम्मी ने कहा कि रोटी का आटा पप्पी ने तैयार किया। इसके बाद पापा ने मुझे प्यार किया और कहा कि कल से मम्मी के साथ बैठकर रोटी बनाना। कल मैं तेरे हाथ की रोटी खाऊँगा।

दूसरे दिन मेरे नाना और नानी आए। सुबह मेरे नाना और नानी ने मेरे हाथ की रोटी खाई। नाना जी ने खुश होकर मुझे सायकिल लाकर दी। मैं रोज़ सायकिल से स्कूल जाने लगी।

● अंकिता पंड्या, चौथी, पादरा, गुजरात

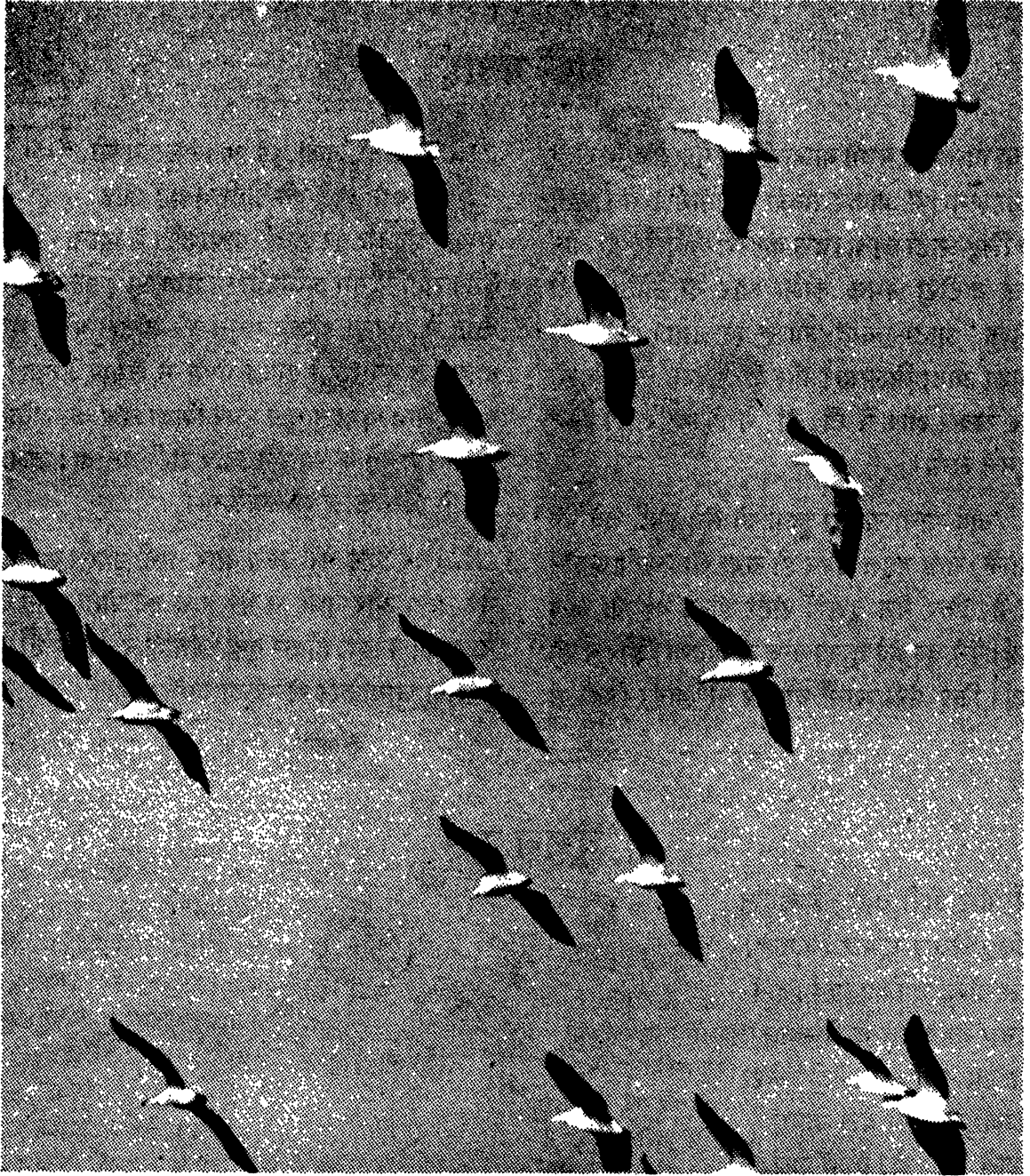
## घूमने गए

मैं और मेरी बड़ी बहन दस रुपए लेकर घूमने निकले। हम दोनों बाजार गईं। दस रुपए के हमने केले खाए। देर रात को घर लौटीं। मेरी मम्मी ने कहा दस रुपए तुमने लिए थे। कहाँ गए। हम चुप रहे। तो मेरी मम्मी को पता चल गया कि इन्होंने खा लिए हैं। बहुत पीटा। हम फिर कभी नहीं घूमने गईं।

● रावी, तीसरी, एलनाबाद, सिरसा, बिहार



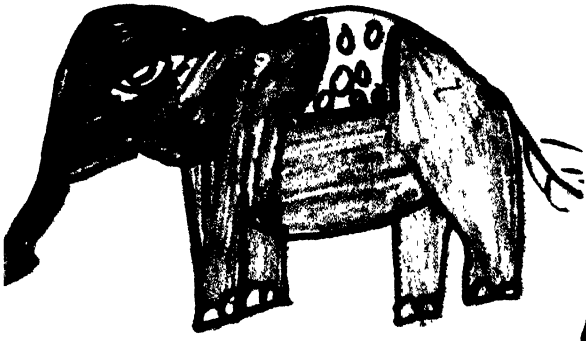
गीता टाकुर, आठवीं, भोपाल, म. प्र. 39



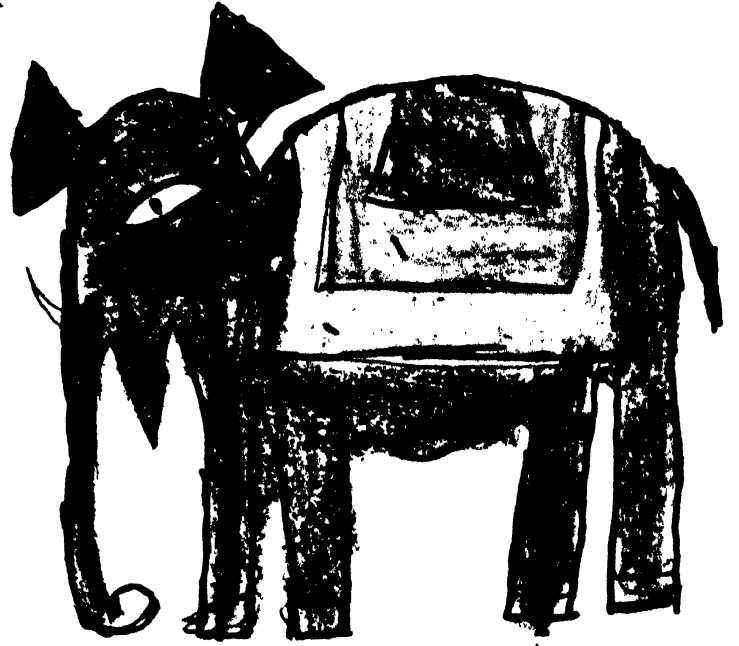
## भारत के आसमान में यही बेड़ा हमसे बड़ा है.

अफसोस कि ये आपको अपनी मंज़िल तक नहीं पहुँचाएँगे। परन्तु इण्डियन एयरलाइन्स पहुँचा सकती है। शुक्र है देश भर में 55 स्थानों और विदेशों में 17 स्थानों को जोड़ने वाले 10 एयर बस ए 300, 30 एयर बस ए 320 और 12 बी - 737 हवाई बेड़े का। और रोज़ाना 220 उड़ानों में 37,000 सीटों का। यह सब आपके लिए पेश करती है, एक सचमुच प्रभावशाली व्यवस्था, जो 22000 अनुभवी और पेशेवर कर्मियों से लैस है।

जैसे अपने ही घर में हों  इंडियन एयरलाइन्स  
Indian Airlines



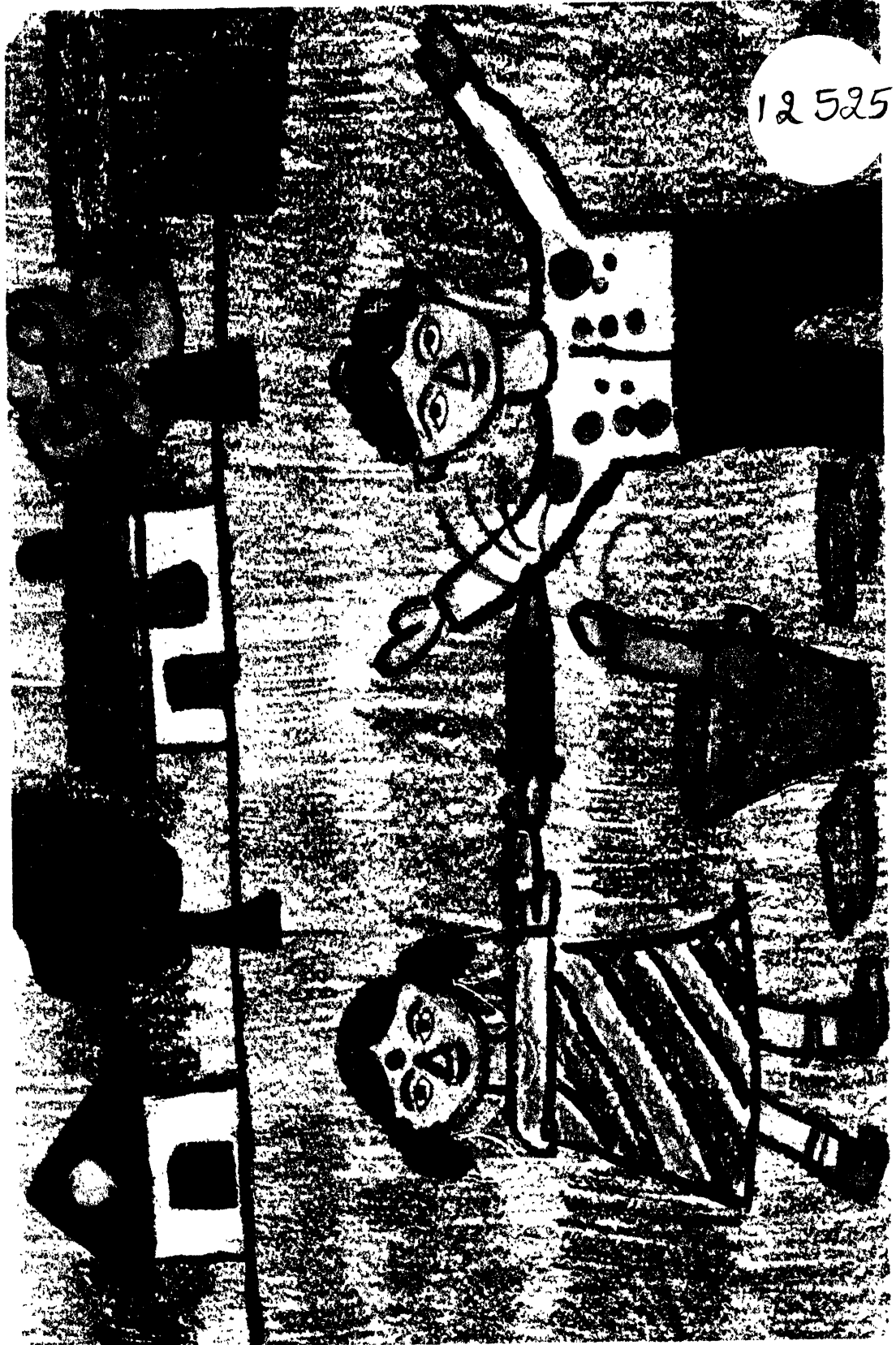
। डामनलाल चंदेल, सातवीं, पेंवरो भरदा, दुर्ग, म. प्र.



। दिलीप राठौर, सातवीं, सतवास, देवास, म. प्र.

। महेश सुन्दरलाल, आठवीं, भावनगर, गुजरात





● मेधा कानाणी, चौथी, भावनगर, गुजरात

